मार्च 2022
खंड - XXXVIII | अंक - I

एक्ज़िमिअस:
निर्यात लाभ

इस अंक में

- भारतीय सौर क्षेत्र: वृद्धि और संपोषी विकास को बढ़ावा
- भारत से निर्यात पर केंद्रीय बजट का प्रभाव
- ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत के व्यापार और निवेश संबंध : हाल के रुझान और संभावनाएं
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रयोगसिद्ध अध्ययन
- भारत-यूके के द्विपक्षीय संबंध : व्यापार और निवेश
- कर्नाटक से निर्यातों को बढ़ाना

तिमाही प्रकाशन

इंडिया एक्ज़िम बैंक

केन्द्र एक भवन, 21 वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल,
कफ परेड, मुंबई - 400 005.
फोन: 022 2217 2600
ईमेल: ccg@eximbankindia.in
www.eximbankindia.in
www.eximmitra.in

भारतीय सौर क्षेत्र: वृद्धि और संपोषी विकास को बढ़ावा

हाल ही में भारत का आर्थिक सर्वेक्षण आया थी। इसमें संभवतः पहली बार सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) और जलवायु परिवर्तन पर एक अलग भाग शामिल किया गया है, जिससे इस क्षेत्र के बढ़ते महत्त्व का पता चलता है। इस भाग में भारत के विभिन्न राज्यों में एसडीजी के विकास पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा पर केंद्रित एसडीजी-7 भी शामिल है। सीओपी 26 में, अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में अपने ट्रैक रिकॉर्ड को देखते हुए, भारत ने 2030 तक 500 गीगावाट की गैर-जीवाश्म आधारित स्थापित क्षमता हासिल करने का लक्ष्य रखा है।

यूएनडीपी का अनुमान है कि ऊर्जा क्षेत्र, जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारक रहा है, क्योंकि मानव-प्रेरित ग्रीनहाउस गैसों में इसकी 73% हिस्सेदारी है। इसके अलावा, इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में, जनसंख्या के एक बड़े हिस्से तक बिजली नहीं पहुंची है। उदाहरण के लिए, अगर किसी गांव के 10% घरों में बिजली पहुंच गई हो तो उस गांव को विद्युतीकृत घोषित कर दिया जाता है। इसमें स्कूल, पंचायत कार्यालय, स्वास्थ्य केंद्र, औषधालय और सामुदायिक केंद्र जैसे सार्वजनिक संस्थान भी शामिल हैं। इस वजह से यह ज़रूरी हो गया है कि सौर ऊर्जा को कोने-कोने तक पहुंचाया जाए। इस कार्य को छत पर सौर ऊर्जा के पैनल लगाने, सड़कों पर सौर ऊर्जा वाली लाइटें लगाने जैसी अन्य सौर सुविधाओं के ज़रिए किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप सौर ऊर्जा जैसी प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करने से न सिर्फ ऊर्जा की पहुंच बढ़ाने में सुविधा होगी, बल्कि इसके ज़रिए दुनिया को स्वच्छ और अधिक प्रभावी ऊर्जा भी दी जा सकती है।

उत्सर्जन के रुझान

वैश्विक आबादी के एक बड़े हिस्से, विशेष रूप से विकासशील देशों के ग्रामीण इलाकों में अब भी बिजली की पहुंच नहीं है। हालांकि, यह भी ध्यान देने वाली बात है कि यूएनडीपी के अनुसार, जलवायु परिवर्तन में ऊर्जा का मुख्य योगदान है, क्योंकि मानव-प्रेरित ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) में इसकी लगभग 73% हिस्सेदारी है। इस वजह से खास तौर पर विकासशील देशों के लिए ऊर्जा संबंधी बुनियादी ढांचे में सुधार करने की बड़ी गुंजाइश है। इसके लिए सौर ऊर्जा प्रणालियों जैसी स्वच्छ प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर उत्सर्जन के रुझान देखने पर पता चलता है कि कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन साल 2000 में 27,698 मीट्रिक टन ($MTCO_2$) से बढ़कर 2018 में 40,389 मीट्रिक टन ($MTCO_2$) हो गया। यह 2.9% की औसत वार्षिक वृद्धि दर (एएजीआर) से बढ़ा है। भारत से 2018 में कार्बन डाईऑक्साइड का 2,307 मीट्रिक टन ($MTCO_2$) उत्सर्जन दर्ज किया गया। यह 2000 में 890 मीट्रिक टन ($MTCO_2$) रहा। इस दौरान, भारत से 5.5% की औसत वार्षिक वृद्धि दर (एएजीआर) से उत्सर्जन बढ़ा है, जो कि विश्व औसत से बहुत अधिक है।

भारत के लिए एक चिंताजनक तथ्य यह है कि वर्ष 2000 में वैश्विक उत्सर्जन में भारत का योगदान 3.2% दर्ज किया गया। तब से लगभग हर साल यह बढ़ा है और 2018 में 5.7% तक पहुंच गया। इसके बावजूद, 2018 में विश्व बैंक के अनुसार, भारत का प्रतिव्यक्ति कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन 1.7 टन रहा। यह वैश्विक स्तर पर काफी कम रहा। क्योंकि इसी दौरान विश्व में प्रति व्यक्ति कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन 4.4 टन रहा।

भारत की सौर यात्रा : आयात पर निर्भरता

सौर ऊर्जा में वृद्धि के संबंध में भारत की कहानी दिलचस्प रही है। अंतरराष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी (आईआरईएनए) के अनुसार, भारत में सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता 2020 में 39.2 गीगावाट दर्ज की गई। जबकि 2010 में केवल 0.1 गीगावाट थी, जबकि इसी दौरान लगभग 134% की औसत वार्षिक वृद्धि दर (एएजीआर) दर्ज की गई। वैश्विक सौर क्षमता में भी भारत की हिस्सेदारी 2010 में मात्र 0.2% से बढ़कर 2020 में 5.5% हो गई है।

हालांकि, इस पर बहुत बहस होती है कि भारत की सौर ऊर्जा की सफलता में उसका अपना कितना योगदान है। भारत की घरेलू फोटोवोल्टिक (पीवी) मॉड्यूल निर्माण क्षमता केवल 15 गीगावाट के आसपास है। भारत को वेफर्स, सेल और पॉली सिलिकॉन जैसे अन्य कच्चे माल के लिए भी चीन से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। पीवी सेल के आयात पर भारत की निर्भरता का पता इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि 2020 में इसका आयात 1.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। जबकि इसे 1.4 बिलियन यूएस डॉलर का व्यापार घाटा हुआ। यह चीन पर इसकी 83% की निर्भरता को प्रदर्शित करता है। कुल मिलाकर, भारत का पीवी आयात 2010 में 0.3 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2019 में 2.5 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। इसी दौरान, भारत का व्यापार संतुलन, 2010 में 0.3 बिलियन यूएस डॉलर की बढ़त से 2019 में (-) 2.2 बिलियन यूएस डॉलर के घाटे में बदल गया।

सौर उपकरण में भारत का व्यापार (बिलियन यूएस डॉलर में)

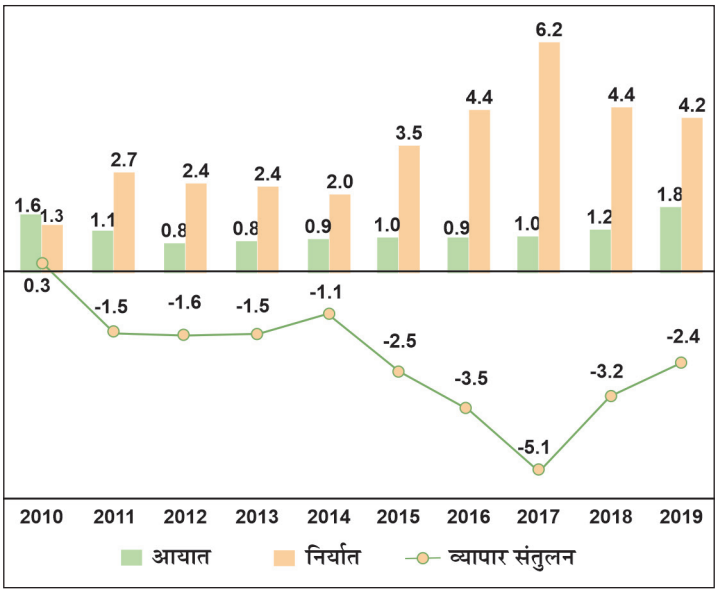

स्रोत : आईटीसी ट्रेडमैप और इंडिया एक्ज़िम बैंक रिसर्च

प्रत्यक्ष तुलनात्मक लाभ (आरसीए) के माध्यम से किए गए निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता विश्लेषण से पता चलता है कि भारत ने 2019 में सौर पीवी के निर्यात में अच्छी प्रतिस्पर्धा नहीं की। हालांकि, सौर संबंधित अन्य उपकरणों जैसे कि स्थैतिक परिवर्तक और मूल धातुओं के शीशे के निर्यात में, भारत ने 2019 में अच्छी प्रतिस्पर्धा का प्रदर्शन किया।

भारत में सौर उपयोग को बढ़ावा देना

दिसंबर 2021 के अंत तक भारत की सौर ऊर्जा क्षमता प्रभावशाली तौर पर 49.3 गीगावॉट रही है। लेकिन यह अब भी राष्ट्रीय सौर मिशन के तहत निर्धारित किए गए अपने लक्ष्य (मार्च 2023 तक 100 गीगावाट) से बहुत दूर है। इसके लिए जरूरी है कि आगे बढ़ने से पहले भारत अपनी कुछ रणनीतियों की समीक्षा करे।

इस क्षेत्र के सामने शुरुआती चुनौतियों में से एक है, लगातार विकसित हो रहे सौर उद्योग को देखते हुए वित्तीय उपलब्धता। सबसे पहले वित्तीय क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान करने की जरूरत है। कोविड-19 के संकट ने केंद्र और राज्य सरकारों, दोनों के लिए संसाधनों को सीमित कर दिया है। इसलिए, इस क्षेत्र से जुड़े विभागों के लिए जरूरी है कि वे सौर ऊर्जा में निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए नए जमाने के उपकरणों को बढ़ावा दें। इन उपकरणों में ग्रीन बॉन्ड, गारंटी आदि शामिल हो सकते हैं। इसके अलावा, भारत में विभिन्न नगरपालिकाएं भी ग्रीन बॉन्ड जारी करने का काम कर सकती हैं। गाजियाबाद नगर निगम ने भारत में सबसे पहले यह काम किया है।

इसके अलावा, एक चीज जिसका भारत में अब तक सही से इस्तेमाल नहीं किया गया, वह है ऑफ-ग्रिड सिस्टम। ऐसा हो सकता है कि ऑफ-ग्रिड सिस्टम महंगे हों, लेकिन वे व्यापक तौर पर इस्तेमाल होने वाली ऊर्जा पहुंच की कुंजी भी हैं। भारत में सौर ऊर्जा के लिए लंबी अवधि वाली वित्तीय मदद मिलना थोड़ा मुश्किल है। लेकिन परिणाम-आधारित वित्त (आरबीएफ) से उन्नत ऑफ-ग्रिड समाधानों के लिए काम किया जा सकता है। आरबीएफ, लक्ष्य पूरा होने पर आधारित सिद्धांत है। भारत में, केरल राज्य विद्युत नियामक आयोग ने आरपीओ लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, 2014 में ऑफ ग्रिड कैप्टिव सौर ऊर्जा संयंत्रों के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (जीबीआई) का आदेश जारी किया।

भारत में आरपीओ अनुपालन की चुनौती आज तक बनी हुई है। आरपीओ संभवतः भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण नीतिगत उपायों में से एक है, जो भारत को अपने सौर ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने में मदद कर सकता है। वित्तीय वर्ष 2019 में ऊर्जा मंत्रालय ने सौर ऊर्जा के लिए 6.75% के आरपीओ निर्धारित किए। हाल के आदेशों के साथ, सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए वित्तीय वर्ष 2022 तक 10.5% का लक्ष्य निर्धारित किया गया। हालांकि, राज्यों के नियामक आयोगों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों से पता चलता है कि वित्तीय वर्ष 2022 के लिए उनके ज़्यादातर आरपीओ लक्ष्य पूरे नहीं हो रहे हैं। केवल हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, मणिपुर, राजस्थान और तमिलनाडु जैसे राज्य ही विद्युत मंत्रालय द्वारा निर्धारित नए आरपीओ के अपने लक्ष्य पूरे कर पा रहे हैं।

कुल मिलाकर, भारत में भूमि की उपलब्धता जैसी पारंपरिक चुनौतियां अब भी बनी हुई हैं। हालांकि, इसमें निरंतर सुधार देखा जा रहा है। इस चुनौती से निपटने के लिए, मालदीव जैसे देशों में बड़ी सफलता पा चुके फ्लोटिंग पीवी जैसे नए समाधान को इस्तेमाल किया जा सकता है।

आगे क्या

सौर ऊर्जा क्षेत्र में 2022 तक 100 गीगावाट की क्षमता स्थापित करना भारत का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। हालांकि, भारत को यह भी पता है कि इसकी कुल सौर क्षमता लगभग 750 गीगावाट है। इस वजह से, भारत का लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह लंबे समय में अपनी क्षमता को और बढ़ाए। ऐसा करने के लिए, भारत को इस लेख में बताई गई अलग-अलग रणनीतियों को लागू करके, चुनौतियों से निपटने की जरूरत है। इन रणनीतियों को लागू करने से न सिर्फ भारत को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी, बल्कि देश को सौर पीवी तकनीकों में आत्मनिर्भर बनने और यहां तक कि वैश्विक स्तर पर निर्यात करने का भी मौका मिलेगा। ■

भारत से निर्यात पर केंद्रीय बजट का प्रभाव

माननीय वित्त मंत्री द्वारा, 1 फरवरी, 2022 को केंद्रीय बजट 2022-23 प्रस्तुत किया गया। यह विकास को बढ़ावा देने वाला बजट था, जो पिछले बजट में निर्धारित किए गए प्रतिचक्रीय दृष्टिकोण पर आधारित है। इस बजट में, अगले 25 वर्षों में अर्थव्यवस्था को निरंतर उच्च-विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने के लिए एक खाका दिया गया है। इसमें `भारत@100' का लक्ष्य शामिल है। इस 25 वर्ष की अवधि को `अमृत-काल' कहा गया है। बजट 2022-23 चार प्रमुख विषयों पर केंद्रित है, जो इस अमृत-काल के दौरान महत्त्वपूर्ण होंगे : (1) पीएम गति शक्ति के तहत आधुनिक बुनियादी संरचना के निर्माण के लिए सार्वजनिक निवेश; (2) समावेशी विकास; (3) उत्पादकता और निवेश, प्रगति के अवसर, ऊर्जा का परिवर्तन और जलवायु को बचाने की कार्रवाई; और (4) निवेश के लिए वित्तीय मदद।

आंकड़ों में बजट

संशोधित अनुमानों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2022 में राजकोषीय घाटा, सकल घरेलू उत्पाद के 6.9% तक पहुंचने का अनुमान है। यह इस वर्ष के बजट में अनुमानित राजकोषीय घाटे- 6.8% से अधिक है। बजट के अनुमानों से बेहतर प्रदर्शन करने वाले राजस्व संग्रह के बावजूद राजकोषीय घाटा बढ़ा है। इसका मुख्य कारण है, बढ़ा हुआ सरकारी व्यय, विशेष रूप से पूंजीगत व्यय में वृद्धि।

वित्तीय वर्ष 2023 के लिए पूंजीगत व्यय अनुमानों को 35.4% की दर से बढ़ाकर 7.50 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है। यह वित्तीय वर्ष 2022 की 5.54 लाख करोड़ रुपये की राशि से अधिक है। इससे, वित्तीय वर्ष 2023 के लिए, भारत सरकार ने कुल राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 6.4% होने का अनुमान लगाया है। पूंजीगत व्यय पर अधिक ध्यान देने से राजकोषीय घाटे में सुधार की उम्मीद है। अनुमान है कि वित्तीय घाटे में वित्तीय वर्ष 2023 में राजस्व घाटा 59.6% तक कम हो जाएगा, जो वित्तीय वर्ष 2022 में 68.4% रहा। इसके अलावा, भारत सरकार ने भी राजकोषीय एकीकरण के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोबारा जाहिर की है। साथ ही, 2025-26 तक राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.5% तक कम करने का लक्ष्य रखा है।

निर्यात पर प्रभाव

सरकार इस समय बुनियादी ढाचागत संरचना और माल ढुलाई पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इस वजह से देश के निर्यात क्षेत्र में बेहतरी की उम्मीद है। वर्तमान में, ऐसा अनुमान है कि भारत में माल ढुलाई की लागत सकल घरेलू उत्पाद की 14% है। जबकि वैश्विक औसत लगभग 8% है। माल ढुलाई की बढ़ी हुई लागत के कारण देश से निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित होती है। इस कमी से उबरने के लिए, पीएम-गति शक्ति जैसी पहल के माध्यम से भारत सरकार द्वारा बुनियादी संरचना के विकास में मदद की जा रही है। इससे व्यापार को सक्षम करने वाली बुनियादी संरचना मज़बूत होगी। माल ढुलाई की लागत में कमी आएगी। निर्यात की प्रतिस्पर्धा में सुधार होगा।

इसके अलावा, बजट में `एक स्टेशन-एक उत्पाद' पहल के बारे में भी बताया गया। यह भारत सरकार की `एक जिला-एक उत्पाद' (ओडीओपी) पहल को आगे बढ़ाएगी। ओडीओपी और `एक स्टेशन-एक उत्पाद' की नई पहल के बीच तालमेल बनाने से समूहों के गठन, अलग-अलग तरह की अर्थव्यवस्थाओं के नई उपलब्धियां हासिल करने और निर्यात की प्रतिस्पर्धा में सुधार हो सकता है।

घरेलू निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बजट में कई सीमा शुल्क परिवर्तनों की भी घोषणा की गई है। चरणबद्ध निर्माण कार्यक्रम (पीएमपी) को बजट में अन्य क्षेत्रों तक बढ़ा दिया गया है, जिसे शुरू में मोबाइल फोन के लिए लागू किया गया था और जिसने घरेलू मूल्यवर्धन को प्रोत्साहित किया। अब इसे सुनने, पहनने वाले उपकरणों आदि तक बढ़ा दिया गया है। पीएमपी के तहत, घरेलू निर्माण को सुविधाजनक बनाने के लिए सीमा शुल्क दरों को व्यवस्थित किया जाता है, ताकि श्रेणीबद्ध दर संरचना बनाई जा सके। पीएमपी के माध्यम से नए और प्रौद्योगिकी-गहन क्षेत्रों को लक्षित करने से भारत के निर्यातों को अपेक्षाकृत रूप से ऐसे अधिक प्रगतिशील उत्पादों की ओर उन्मुख करने में मदद मिलेगी, जिन पर वस्तुओं के मूल्य में उतार-चढ़ाव का बहुत ज्यादा असर नहीं पड़ता है।

भारत सरकार ने सीमा शुल्क छूट की भी समीक्षा की है। इस समीक्षा के जरिए छूट की लगभग 350 प्रविष्टियों को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया जाएगा। इससे स्थानीय उद्योग को लाभ होगा और अधिक क्षमता निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। परियोजना आयातों और पूंजीगत वस्तुओं के आयातों पर उपलब्ध रियायती दरों को भी चरणबद्ध तरीके से समाप्त किया जाएगा। इससे भारत में पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने में भी मदद मिल सकती है। पूंजीगत सामान जैसे कि उच्च तकनीक वाले क्षेत्रों में पर्याप्त क्षमता निर्माण से उन देशों से परियोजना निर्यातों को बढ़ाने में मदद मिल सकती है, जिन्होंने वैश्विक मंदी के दौरान भी उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया। इसके अलावा बजट में, निवेश को प्रोत्साहित करने और वैश्विक मूल्य-श्रृंखलाओं के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए, एक और प्रयास किया गया। इसके तहत सीमा शुल्क दर और टैरिफ संरचना के सरलीकरण के उपायों की घोषणा की गई।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण घोषणा विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) अधिनियम को लेकर की गई है। इस अधिनियम को एक नए कानून से बदला जाएगा। कानूनों की समीक्षा कर उन्हें और अधिक लचीला और व्यापार अनुकूल बनाने तथा राज्य सरकारों को भागीदार के रूप में शामिल करने से निर्यात प्रोत्साहन के एसईजेड मॉडल को अपनाया जाएगा। एसईजेड इकाइयों में व्यापार करने में आसानी हो, इसके लिए, सरकार एसईजेड के सीमा शुल्क प्रबंधन में सुधार करना चाहती है। इसमें उच्च सुविधा और सिर्फ जोखिम-आधारित जांच पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। एसईजेड में सीमा शुल्क प्रबंधन पूरी तरह से आईटी संचालित होगा और सीमा शुल्क के राष्ट्रीय पोर्टल पर काम करेगा। नए उपायों से अधिक निवेश को प्रोत्साहन मिलने का अनुमान है। इससे एसईजेड से निर्यात को भी बढ़ावा मिल सकता है।

व्यवसाय सुगमता (ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस) 2.0 जैसे अन्य उपायों और नए क्षेत्रों तथा प्रौद्योगिकी गहन क्षेत्रों पर ध्यान देने से भी निर्यात क्षेत्र को बेहतर करने की संभावना है। व्यवसाय सुगमता 2.0 से निर्यातकों की लागत स्पर्धात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। नए और उच्च तकनीक वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने से भारतीय निर्माण क्षेत्र और निर्यातकों को मूल्य श्रृंखला में उच्च स्थान मिलेगा। ताकि उन्हें कम लागत वाले अन्य आपूर्तिकर्ताओं से कम प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़े। ■

ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत के व्यापार और निवेश संबंध : हाल के रुझान और संभावनाएं

ऑस्ट्रेलिया दुनिया की तेरहवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 2020 में इसका नॉमिनल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 1.4 ट्रिलियन यूएस डॉलर रहा[1]। ऑस्ट्रेलियाई अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का अहम स्थान है। इसके सकल घरेलू उत्पाद में अकेले सेवा क्षेत्र का 75% योगदान है। वहीं, उद्योग क्षेत्र की 22% और कृषि की 3% हिस्सेदारी है। ऑस्ट्रेलिया के विकास में तीव्र निर्यात विस्तार, सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ने, और खनन उद्योग के बड़े उद्योग के रूप में विस्तार ने अहम भूमिका निभाई है। इसके साथ ही, प्रभावी शासन प्रणाली से स्थिर और पारदर्शी कार्य परिवेश बना है। ऑस्ट्रेलिया में खनिज के विपुल भंडार हैं। यह दुनिया में लिथियम का सबसे बड़ा उत्पादक है और पूरे विश्व में सोना, लोहा, सीसा, जस्ता, और गिलट के पांच सबसे बड़े उत्पादकों में शामिल है। इसके अलावा, यहां दुनिया का यूरेनियम का सबसे बड़ा और कोयले का चौथा सबसे बड़ा भंडार है।

ऑस्ट्रेलिया का व्यापार

हाल के वर्षों में, ऑस्ट्रेलिया का कुल मर्चेंडाइज व्यापार 2006 के 262.7 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2020 में 456.8 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। इसके अलावा, मर्चेंडाइज निर्यात, 2006 में 123.3 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2020 में 254.5 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। वहीं, दूसरी तरफ़, इसी दौरान मर्चेंडाइज आयात भी 139.4 यूएस डॉलर से बढ़कर 202.3 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया।

2020 में, ऑस्ट्रेलिया के निर्यातों का लगभग 36% चीन को रहा। चीन को ऑस्ट्रेलिया का निर्यात 90.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। वहीं, जापान 19.1 बिलियन यूएस डॉलर (कुल निर्यात का 7.5%) के आयात के साथ ऑस्ट्रेलिया के लिए दूसरा सबसे बड़ा आयातक रहा। 2020 में, ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 7 बिलियन यूएस डॉलर का निर्यात किया, जो उसी वर्ष के ऑस्ट्रेलिया के कुल निर्यात का 2.8% था। भारत साल 2020 में, ऑस्ट्रेलिया के लिए छठा सबसे बड़ा आयातक रहा।

2020 में, 57.6 बिलियन यूएस डॉलर (उस साल के कुल आयात का 28.5%) के आयातों के साथ चीन, ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे बड़ा निर्यातक रहा। उसी साल अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया के लिए दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक रहा, जिसने ऑस्ट्रेलिया को कुल 23.7 बिलियन यूएस डॉलर का निर्यात किया। ऑस्ट्रेलिया के कुल आयातों में यूएस की 11.7% की हिस्सेदारी रही। इसी साल, ऑस्ट्रेलिया ने भारत से 3.7 बिलियन यूएस डॉलर का सामान आयात किया। 2020 में ऑस्ट्रेलिया के कुल आयातों में भारत की हिस्सेदारी सिर्फ़ 1.8% रही। इसके साथ ही, भारत उस साल ऑस्ट्रेलिया के लिए 14वां सबसे बड़ा निर्यातक रहा।

ऑस्ट्रेलिया में एफडीआई और निवेश परिवेश

संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (अंकटाड) की विश्व निवेश रिपोर्ट 2021 के अनुसार, 2020 में एफडीआई पाने वाले देशों में ऑस्ट्रेलिया विश्व स्तर पर 14वां सबसे बड़ा देश रहा। पिछले कुछ वर्षों में ऑस्ट्रेलिया से एफडीआई जावक सीमित रहा है और एफडीआई के मामले में निवल आवक दर्ज की गई है। ऑस्ट्रेलिया को 2010-2020 के दौरान 4,614 परियोजनाओं से कुल 250.5 बिलियन यूएस डॉलर का निवेश मिला। 2010 में 54.7 बिलियन यूएस डॉलर का एफडीआई मिलने के बाद, 2011 से 2019 के बीच ऑस्ट्रेलिया में औसत एफडीआई आवक लगभग 19.6 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। 2019 में एफडीआई आवक 34.1 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो 2020 में वैश्विक महामारी के चलते 19.6 बिलियन यूएस का ही रह गया।

जनवरी 2010 से दिसंबर 2020 के दौरान ऑस्ट्रेलिया का जावक एफडीआई 115.9 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। दूसरे शब्दों में कहें तो ऑस्ट्रेलियाई संस्थाओं ने इस दौरान देश से बाहर कुल 115.9 बिलियन यूएस डॉलर का प्रत्यक्ष निवेश किया। ऑस्ट्रेलिया का एफडीआई जावक 2005 में 15.5 बिलियन यूएस डॉलर का था, जो 2008 में तेजी से बढ़कर 25.4 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। 2010-2020 के दौरान औसत एफडीआई जावक 10.5 बिलियन यूएस डॉलर रहा। वैश्विक महामारी की वजह से, एफडीआई जावक में भारी कमी देखी गई। यह 2019 में 11.3 बिलियन यूएस डॉलर था, जो 2020 में घटकर 3.9 बिलियन यूएस डॉलर ही रह गया।

भारत-ऑस्ट्रेलिया का व्यापार संबंध

भारत और ऑस्ट्रेलिया, दोनों का कुल सकल घरेलू उत्पाद 4.1 ट्रिलियन यूएस डॉलर है, जो विश्व सकल घरेलू उत्पाद का 4.7% है[2]। दुनिया भर में बदलते हालातों के मद्देनजर ऑस्ट्रेलिया, भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाले एक महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखता है।

पिछले कुछ समय में, ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का कुल व्यापार कमोबेश स्थिर ही बना रहा है। 2010 में यह 13.7 बिलियन यूएस डॉलर का था और 2019 में 13.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। महामारी से जो खलल पड़ा, उसकी वजह से 2020 में द्विपक्षीय व्यापार में 10.7 बिलियन यूएस डॉलर की कमी देखी गई। वहीं, दूसरी तरफ, निर्यातों में दोगुनी से अधिक वृद्धि हुई। ऑस्ट्रेलिया को निर्यात 2010 में 1.7 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2020 में 3.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। इसी दौरान, आयात 12.1 बिलियन यूएस डॉलर से घटकर 7.3 बिलियन यूएस डॉलर के रह गए। ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का लगातार व्यापार घाटा रहा है। यह 2011 में सबसे ज़्यादा 11.3 बिलियन यूएस डॉलर का था, जो 2020 में घटकर 3.8 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया।

2020 में भारत से ऑस्ट्रेलिया को सबसे अधिक पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात किया गया (2020 में कुल निर्यातों का 24.2%)। इसके बाद 8.4% के साथ फार्मासूटिकल उत्पादों का दूसरा स्थान रहा। इसके साथ ही, निर्यात किए गए अन्य प्रमुख उत्पादों में प्राकृतिक या संवर्धित मोती या रत्न (6.6%), मशीनरी और मशीनी उपकरण (5.1%), विद्युत मशीनरी और उपकरण जैसे सामान शामिल हैं।

आयातों की बात की जाए तो 2020 में ऑस्ट्रेलिया से भारत ने सबसे अधिक पेट्रोलियम क्रूड (कुल आयातों का 76.5%) का आयात किया। इसके बाद, अकार्बनिक रसायन और कीमती धातुओं के अकार्बनिक या कार्बनिक मिश्रण

[1] वर्ल्ड बैंक ग्लोबल इकोनॉमिक प्रास्पेक्ट्स 2020

[2] वर्ल्ड इकोनॉमिक आऊटलुक, अक्टूबर 2021

(4.7%), प्राकृतिक या संवर्धित मोती या रत्न (4.3%), और अयस्क, धातुमल और भस्म (2.1%) जैसे सामान शामिल रहे। इस प्रकार ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का व्यापार घाटा रहा। हालांकि, हाल के वर्षों में वैश्विक महामारी की वजह से हुए व्यापार बाधाओं के चलते यह घाटा कम हुआ है।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने के अवसर

द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को बढ़ाने के लिए और खास तौर पर ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत के बढ़ते व्यापार घाटे को दूर करने के लिए, यह उपयुक्त होगा कि भारत से ऑस्ट्रेलिया को निर्यात की जा सकने वाली वस्तुओं को चिह्नित किया जाए और उन पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

ऑस्ट्रेलिया द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में भारत की मामूली हिस्सेदारी ही है। ऑस्ट्रेलिया में आयात की भारी मांग और भारत की निर्यात क्षमता और तुलनात्मक लाभ की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, भारत से निर्यात की जा सकने वाली संभावित वस्तुओं में अन्य के साथ-साथ इन वस्तुओं को शामिल किया जा सकता है:

- मशीनरी और मशीनी उपकरण (एचएस-84)
- विद्युत मशीनरी और उपकरण (एचएस-85)
- रेलवे या ट्रामवे के अलावा अन्य वाहन (एचएस-87)
- फार्मासूटिकल उत्पाद (एचएस-30)
- प्राकृतिक या संवर्धित मोती, कीमती या कम कीमत वाले रत्न (एचएस-71)
- प्लास्टिक और प्लास्टिक की वस्तुएं (एचएस-39)
- लोहे या स्टील की वस्तुएं (एचएस-73)
- परिधान और कपड़ों के सामान, बुने हुए या क्रोशिया किए हुए (एचएस-62)
- परिधान और कपड़ों के सामान, बुने हुए या क्रोशिया किए हुए (एचएस-61)
- कार्बनिक रसायन (एचएस-29)
- एल्युमिनियम और उसके सामान (एचएस-76)

ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत के दोतरफ़ा निवेश संबंध और निवेश की क्षमता

जनवरी 2010 से दिसंबर 2020 के दौरान, भारत को ऑस्ट्रेलिया से 3.2 बिलियन यूएस डॉलर का निवेश मिला। इसी दौरान ऑस्ट्रेलिया में भारत का जावक एफडीआई 7.9 बिलियन यूएस डॉलर रहा। कई भारतीय कंपनियों ने अलग-अलग क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलिया के बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

विदेश में निवेश करने के लिए ऑस्ट्रेलिया एक आकर्षक देश है। किसी भी नए कारोबार की शुरुआत करने के लिए, ऑस्ट्रेलिया दुनिया के सबसे उपयुक्त देशों में से एक है। विश्व बैंक द्वारा जारी व्यवसाय सुगमता रैंकिंग 2020 के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया चार पायदान के सुधार के साथ 14वीं रैंक पर आ गया है। ओईसीडी के उच्च आय वाले देशों में, कारोबार आसानी से शुरू करने की श्रेणी में ऑस्ट्रेलिया तीसरे और ऋण सुलभता की श्रेणी में दूसरे स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया नए कारोबार आसानी से शुरू करने के लिए कई सेवाएं देता है, ताकि विदेशी निवेशकों को अपना काम शुरू करने के लिए एक समान अवसर मिल सकें।

ऑस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में निवेश करने के लिए अच्छे अवसर हैं। इनमें अन्य के साथ-साथ अक्षय ऊर्जा, महत्त्वपूर्ण खनिजों का उत्खनन, बुनियादी ढांचा और कृषि-व्यवसाय और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र शामिल हैं। ऑस्ट्रेलिया में वैश्विक निवेश को बढ़ावा देने के लिए ऑस्ट्रेलिया सरकार की ओर से इन क्षेत्रों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

बेहतर सहयोग के लिए रणनीतियां

द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाना

कारोबार के लिहाज से भारत और ऑस्ट्रेलिया महत्त्वपूर्ण सहयोगी हैं। पिछले कुछ वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार लगातार बढ़ा है। हालांकि, व्यापार के हिसाब से ऑस्ट्रेलिया फायदे में रहा है। ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का अब तक का सर्वाधिक व्यापार घाटा 2011 में 11.3 बिलियन यूएस डॉलर का रहा है। इस साल भारत से सिर्फ 2.1 बिलियन यूएस डॉलर का निर्यात हुआ और 13.4 बिलियन यूएस डॉलर की वस्तुएं आयात की गईं। इसके बाद, 2016 तक यह घाटा कम होते हुए 5.8 बिलियन यूएस डॉलर का घाटा रह गया। हालांकि, 2017 में यह घाटा फिर से तेजी से बढ़कर 10.5 बिलियन यूएस डॉलर हो गया, जो 2019 में घटकर 7.6 बिलियन यूएस डॉलर और 2020 में 3.8 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। व्यापार के बढ़ते अंतर को कम करने के लिए, इस शोध अध्ययन में उल्लिखित अनुसार,भारत से निर्यात की जा सकने वाली वस्तुओं पर जल्द से जल्द ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है।

समुद्री सुरक्षा बढ़ाना

विश्व स्तर पर देखा जाए, तो हिंद-प्रशांत देश प्रमुख व्यापार क्षेत्रों में से एक है, जहां कारोबार की अपार संभावनाएं हैं। भारत और ऑस्ट्रेलिया हिंद-प्रशांत क्षेत्र की दो प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं हैं। इस दृष्टि से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, सुरक्षा, स्थिरता, और समृद्धि सुनिश्चित करना, दोनों के लिए फायदे का सौदा होगा, दोनों की रणनीतिक और सुरक्षा संबंधी चुनौतियां तकरीबन एक समान हैं।

व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) पर हस्ताक्षर

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 2011 से मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत चल रही है। उम्मीद की जा रही है कि दिसंबर 2022 की शुरुआत तक इस समझौते पर बातचीत पूरी हो जाएगी। इसके बाद दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध और सुदृढ़ हो सकते हैं। साथ ही, कई अन्य क्षेत्रों में बेहतर सहयोग के अवसर बनेंगे। इसके अलावा, सीईसीए के फॉरवर्ड लिंकेज के चलते भारत और ऑस्ट्रेलिया दोनों को फायदा होगा और दोनों देशों के बाजार का विस्तार होगा।

एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) में शामिल होना

एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) 1989 में स्थापित एक क्षेत्रीय आर्थिक मंच है। इसका उद्देश्य संतुलित, समावेशी, संपोषी, नवोन्मेषी और सुरक्षित विकास को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण में तेजी लाना है। एपीईसी में भारत के शामिल होने से भारत और अन्य सदस्य देशों के लिए ढेर सारे अवसर खुलेंगे।

अक्षय ऊर्जा में भागीदारी

अक्टूबर, 2021 में जारी की गई रिन्यूएबल एनर्जी कंट्री अट्रैक्टिवनेस इंडेक्स (आरईसीएआई) रैंकिंग के अनुसार, अक्षय ऊर्जा क्षेत्र और परिचालन संभावनाओं में निवेश आकर्षित करने की क्षमता के आधार पर, भारत को दुनिया के शीर्ष 40 बाज़ारों में तीसरे स्थान और ऑस्ट्रेलिया को 7वां स्थान मिला था। ऑस्ट्रेलिया के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों और तकनीकी जानकारी को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कंपनियां अपने जैसी अन्य ऑस्ट्रेलियाई कंपनियों के साथ मिलकर काम कर सकती हैं, ताकि अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में संयुक्त शोध और निवेश को बढ़ावा मिले और दोनों देशों की जरूरतों को समझने के लिए एक मंच बनाया जा सके।

ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच सुदृढ़ व्यापार और निवेश संबंध हैं। यह साझेदारी एशियाई क्षेत्र में, उभरती हुई महाशक्ति है और विकास को गति देने वाली है। अतः दोनों अर्थव्यवस्थाओं के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में साथ मिलकर काम करने के कई अवसर हैं, जिससे दोनों लाभान्वित होंगी। ■

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रयोगसिद्ध अध्ययन

भारतीय निर्यात-आयात बैंक ने 1989 में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शोध वार्षिक (ईरा) पुरस्कार की स्थापना की थी। इस पुरस्कार का उद्देश्य भारत और विदेशों में विश्वविद्यालयों तथा शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय नागरिकों द्वारा अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, व्यापार, विकास और संबंधित वित्तपोषण में शोध को बढ़ावा देना है। 'अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रयोगसिद्ध अध्ययन' शीर्षक से किया गया शोध, ईरा पुरस्कार 2020 की विजेता थीसिस रही। यह शोध ली कुआन यू स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र की सहायक प्रोफेसर डॉ. संजना गोस्वामी द्वारा की गई थीसिस पर आधारित है।

अर्थशास्त्रियों का लंबे समय से यह मानना है कि मुक्त व्यापार के जरिए जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सकता है। साथ ही, आयात और निर्यात करने वाले दोनों देशों को व्यापार करने से लाभ होता है। प्रयोगसिद्ध प्रमाण का बढ़ता दायरा ज्यादातर सैद्धांतिक व्यापार मॉडलों के इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि व्यापार से एक देश के अंदर ही संसाधनों को दोबारा आवंटित किया जाता है। इसमें आय वितरण की पाबंदी के साथ नई नौकरियां खत्म होती हैं, तो नए रोजगार पैदा भी होते हैं। ऐसे प्रमाण हैं कि इससे अधिकांश देशों को कुल मिलाकर लाभ ही होता है। हालांकि कुछ को नुकसान भी होता है। व्यापार के प्रतिकूल प्रभाव कुछ खास भौगोलिक क्षेत्रों में ही सबसे ज़्यादा दिखते हैं। विकासशील और विकसित देशों में लंबे समय तक उनका प्रभाव दिखता है।

इस अध्ययन में दो बड़ी घटनाओं के प्रभाव की पड़ताल कर अंतरराष्ट्रीय व्यापार के इन वितरण प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है। एक, 2000 के दशक में, निर्यातक शक्ति के रूप में चीन का उदय। इसे 'चाइना शॉक' के रूप में भी जाना जाता है। और दूसरा, 2018 का हालिया चीनी-अमेरिकी व्यापार युद्ध, जिसका असर श्रम बाजार पर पड़ा। शोध अध्ययन के पहले हिस्से में, संयुक्त राज्य में व्यावसायिक रोजगार पर `चाइना शॉक' के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। वहीं, दूसरे भाग में, संयुक्त राज्य और चीन द्वारा संयुक्त राज्य में क्षेत्रीय रोजगार पर लगाए गए शुल्क के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। `चाइना शॉक' ने रोजगार पर आयात प्रतिस्पर्धा के बढ़ते हुए प्रभाव और व्यापार युद्ध शुल्क ने रोजगार पर आयात प्रतिस्पर्धा में गिरावट की तरफ ध्यान आकर्षित किया। दोनों प्रभावों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार के वितरण संबंधी प्रभावों को दिखाया।

व्यवसाय कई विशेषताओं की वजह से भिन्न होते हैं। जैसे कि उनका वेतन, नियमितता की सीमा और आवश्यक शिक्षा का स्तर। इन अंतरों के कारण प्रौद्योगिकी या अंतरराष्ट्रीय व्यापार झटकों के लिए, व्यावसायिक रोजगार स्तरों पर मुश्किल प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, इस बात की अधिक संभावना है कि ऑटोमेशन बहुत रुटीन व्यवसायों की जगह ले ले और अकुशल श्रम बहुल किसी देश के साथ अंतरराष्ट्रीय ऑफशोरिंग संबंध के चलते स्रोत देश में कम-कुशलता वाले व्यवसाय खत्म हो जाएं। पिछले कुछ दशकों में अमेरिका के लिए सबसे बड़ा व्यापार झटका रहा, दुनिया के सबसे बड़े व्यापारी के रूप में चीन का उदय। ऑटर, डॉर्न, और हैन्सन (2013), एसमोगलू, ऑटर, डॉर्न, हैन्सन और प्राइस (2016ए), और पीयर्स और स्कॉट (2016) नाम के प्रभावशाली शोधपत्रों में अमेरिका के रोजगार पर चीन की आयात प्रतिस्पर्धिता का एक बड़ा नकारात्मक प्रभाव देखा गया। इसको और मज़बूती देते हुए, इस अध्ययन का लक्ष्य है, अलग-अलग व्यवसायों के वेतन, गैर-नियमितता और शिक्षा आदि की विशिष्टताओं के अनुरूप 2002 से 2014 तक अलग-अलग व्यसायों को क्रमबद्ध करते हुए अमेरिकी व्यावसायिक रोजगार पर 'चाइना शॉक' के प्रभाव का अनुमान लगाया जा सके।

लगभग 750 व्यवसायों को निम्न से उच्च वेतन, रुटीन से नॉन-रुटीन, और निम्न से उच्च शिक्षा में क्रमबद्ध करने के बाद, इस अध्ययन के पहले हिस्से में 2002 से 2014 तक कुल अमेरिकी रोज़गारों में निम्न-अनुक्रमित (इंडेक्स्ड) व्यवसायों की हिस्सेदारी में गिरावट दर्ज की गई। इसी दौरान, उच्च-अनुक्रमित व्यवसायों की हिस्सेदारी में वृद्धि देखी गई। उद्योग के स्तर पर देखा जाए, तो ज्यादातर उद्योगों में उच्च-अनुक्रमित व्यवसायों में रोजगार बढ़ा। प्रयोगसिद्ध विश्लेषण से इस बात की पुष्टि होती है कि यह चीनी आयात के जोखिम की वजह से हुआ। खास तौर पर, निम्न-अनुक्रमित व्यवसायों पर चीन के बड़े नकारात्मक रोजगार प्रभाव के कारण ऐसा हुआ।

आयात पर शुल्क लगने से घरेलू फर्मों के लिए आयात प्रतिस्पर्धिता कम हो जाती है। इस कारण ज्यादा फर्मों को बाजार में आने या विस्तार करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिससे नई नौकरियां पैदा होती हैं। दूसरी तरफ, निर्यातों पर प्रतिकार शुल्क के कारण घरेलू फर्मों को नुकसान होता है। उनका विस्तार रुक सकता है या व्यापार खत्म भी हो सकता है। इस वजह से श्रमिकों को रोजगार के लिए दूसरी जगह जाना पड़ सकता है। इसके अलावा, मध्यवर्ती उत्पादों के आयात पर लगने वाले शुल्क की वजह से आयात किए गए उत्पाद अधिक महंगे हो सकते हैं। इससे घरेलू फर्मों को नुकसान हो सकता है और श्रमिकों को रोजगार के लिए दूसरी जगह जाना पड़ सकता है। व्यापार युद्ध की वजह से आयात पर शुल्क या कोटा लगता है और बाहर के देश, व्यापार पर इसी तरह की पाबंदियां लगाकर जवाबी कार्रवाई करते हैं। व्यापार युद्ध जैसे-जैसे बढ़ता जाता है, अंतरराष्ट्रीय व्यापार कम होता जाता है। बदले में श्रम बाजार पर विस्तार संबंधी प्रभाव पड़ता है। जनवरी 2018 से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के शासन में अमेरिकी प्रशासन द्वारा हाल ही में किया गया व्यापार विस्तार का फैसला एक अभूतपूर्व कदम है। महामंदी के बाद से व्यापार विवादों के

किसी भी पिछले प्रकरण में ऐसा नहीं किया गया। इस अध्ययन के दूसरे हिस्से में अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के अल्पकालिक और दीर्घकालिक रोजगार परिणामों का अध्ययन करके इन वितरण प्रभावों की पड़ताल की गई है।

हालांकि, इन व्यापार युद्धों के लिए, राष्ट्रीय सुरक्षा (स्टील के मामले में) से लेकर बौद्धिक संपदा की सुरक्षा (चीन के मामले में) तक कई कानूनी दलीलें दी गईं। जब अपने राजनीतिक आधार पर बात करते समय राष्ट्रपति ट्रम्प ने इसका औचित्य सामने रखा, तो अमेरिकी कामगारों और अमेरिकी नौकरियों की सुरक्षा की बात कही। यह अध्ययन इस बात का प्रमाण है कि इस तरह का दावा वैश्विक वित्तीय संकट की घटनाओं से पहले विश्वसनीय हो सकता था, लेकिन यह आज के परिवेश में सही नहीं है।

अल्पकालिक दृष्टिकोण में अमेरिका के आयात शुल्कों में हुए परिवर्तन के प्रभावों का अनुमान लगाया गया है। अमेरिका के वे आयात शुल्क, जिनका असर मध्यवर्ती उत्पादों के खरीदारों पर पड़ा और ज़ोन-स्तरीय रोजगार वृद्धि को कम करने पर चीन की तरफ से प्रतिशोध के तौर पर लगाए गए शुल्कों के प्रभाव की पड़ताल की गई है। इस अध्ययन में, रोजगार के मासिक डेटा और जनवरी 2017 से मार्च 2019 तक अमेरिका-चीन के व्यापार और शुल्क की जानकारी का इस्तेमाल किया गया है। इसमें सामने आया है कि चीन की तरफ से प्रतिशोध के तौर पर लगाए गए शुल्क का जोन-स्तरीय रोजगार वृद्धि पर सांख्यिकीय रूप से उल्लेखनीय और नकारात्मक प्रभाव पड़ा। जबकि अमेरिका की तरफ से लगाए गए आयात शुल्क का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इससे पता चलता है कि वे क्षेत्र जिन पर अपेक्षाकृत से अधिक निर्यात शुल्क लगा, उन्हें असमान रूप से नुकसान हुआ। जबकि वे क्षेत्र जिन पर अपेक्षाकृत से अधिक आयात शुल्क लगा है, वे भी व्यापार युद्ध से पहले की तुलना में कोई खास तरक्की नहीं कर रहे।

दीर्घकालिक दृष्टिकोण, प्रयोगसिद्ध अंतरराष्ट्रीय व्यापार साहित्य में जांची-परखी एक घटना पर एक काल्पनिक व्यापार युद्ध लगा देता है। यह घटना है, चीन से बढ़ते आयात या अमेरिका के श्रम बाजार पर 'चाइना शॉक' (ऑटर, डॉर्न, और हैन्सन (2013), एसमोगलू, ऑटर, डॉर्न, हैन्सन और प्राइस (2016ए), आदि) के कारण बड़ी मात्रा में नौकरियों के घटने वाले प्रभाव। इसके अलावा, निर्यातों से रोजगार पैदा होने वाले प्रभाव, जिसने चीन के आयात (फींस्ट्रा, मा और जू, 2019) द्वारा किए गए नुकसान को लगभग खत्म कर दिया। उद्योग-स्तरीय विशिष्टताओं का इस्तेमाल कर चीनी आयात प्रतिस्पर्धा, गैर-चीनी आयात प्रतिस्पर्धा और विनिर्माण रोजगार में परिवर्तन पर अमेरिकी निर्यात विस्तार के प्रभाव का आकलन करते हुए चीन द्वारा प्रतिकार के तौर पर इस्तेमाल की गई तीन अलग-अलग स्थितियों के तहत प्रतितथ्यात्मक रोजगार स्तरों की गणना की जाती है: (i) साधारण प्रतिकार, जिसमें सभी उद्योगों में अमेरिकी निर्यात पर समान प्रतिबंध लगाया जाता है, (ii) राजनैतिक प्रतिकार, जिसमें खास तौर पर उन उद्योगों को निशाना बनाया जाता है, जिनमें ट्रम्प समर्थकों का एक बड़ा हिस्सा है और (iii) उत्तरदायित्वपूर्ण प्रतिकार, जिसमें वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर प्रतिकार के प्रभाव को कम किया जाता है। यह अध्ययन दो समयावधियों पर किया गया: 1991-2007, जहां विनिर्माण रोजगार पर `चाइना शॉक' नाम की परिघटना का बड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ा और 2010-2016 की मंदी के बाद का समय, जहां विनिर्माण रोजगार पर `चाइना शॉक' का कोई प्रभाव नहीं है। इस प्रयोगसिद्ध मॉडल में व्यापार युद्ध, प्रतिकार के प्रकारों के आधार पर आयात और निर्यात, दोनों के जोखिम को एक साथ कम करता है। इसलिए, चीन के आयात के कारण कम हुई कुछ नौकरियों को वापस लाया जा सका। जबकि अमेरिका के निर्यात विस्तार के कारण मिली कुछ नौकरियां खत्म हो गईं।

इस प्रयोगसिद्ध अध्ययन के लिए, एसमोगलू, ऑटर, डॉर्न, हैन्सन और प्राइस (2016ए), और फींस्ट्रा, मा और जू (2019) का बारीकी से अनुसरण किया गया है। `इंस्ट्रूमेंटल वैरिएबल अप्रोच' का इस्तेमाल करते हुए, एसमोगलू, ऑटर, डॉर्न, हैन्सन और प्राइस (2016ए) में उद्योग तथा विनिमय करने वाले क्षेत्र, दोनों के स्तरों पर अमेरिका के रोजगार पर चीन के आयात के बढ़ते प्रभावों का आकलन किया गया है। वहीं, फींस्ट्रा, मा और जू (2019) में अमेरिका के निर्यात की वजह से रोजगार पर हुए प्रभावों को भी विस्तार से बताया गया है। दोनों ही पत्रों में यह पाया गया कि चीन के आयात को मिली बढ़त, अमेरिका में रोजगार के नुकसान से जुड़ी है। फींस्ट्रा, मा और जू (2019) में पता चला कि `निर्यात को मिली बढ़त' का एक प्रतिकूल प्रभाव है। इस कारण 1991-2007 के दौरान, चीन की वजह से नौकरियों को हुए नुकसान की भरपाई हो जाती है। वर्ष 1991-2007 की अवधि पर किए गए प्रतितथ्यात्मक अध्ययन से पता चलता है कि अगर अमेरिका एक समान शुल्क के साथ-साथ चीन कोई प्रतिशोधात्मक कदम नहीं उठाता, तो निर्माण क्षेत्र में पर्याप्त नौकरियां वापस आ जाएंगी। यह स्थिति `चाइना शॉक' के प्रभावों को लगभग उलट सकती हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि चीन की प्रतिशोधात्मक रणनीति क्या रही, लेकिन अगर अमेरिका इस दौरान आयात शुल्क लगाकर संरक्षणवादी दृष्टिकोण अपनाता, तो निर्माण क्षेत्र में रोजगार बढ़ते।

हालांकि, सिर्फ 2010-2016 की मंदी के बाद की अवधि पर ध्यान केंद्रित रहा तो ये नतीजे नहीं मिलेंगे। इस मामले में, `चाइना शॉक' की वजह से नौकरी कम होने वाला प्रभाव अब खत्म हो गया है। असल में, चीन के आयात को मिलती बढ़त का अमेरिका के निर्माण क्षेत्र के रोजगार पर सकारात्मक और बहुत कम प्रभाव पड़ा है। इस अवधि के प्रतितथ्यात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि व्यापार युद्ध से साफ तौर पर नौकरियों को नुकसान होगा।

इन नतीजों से, मिले-जुले तौर पर यह पता चलता है कि अमेरिका-चीन व्यापार युद्धों का अल्पावधि में नकारात्मक प्रभाव है। लंबे समय में भी बड़े पैमाने पर सकारात्मक होने की संभावना नहीं है, क्योंकि पिछले दशक में विनिर्माण उत्पादन के क्षेत्र में बदलाव हुआ है। यह स्वचालन और नए देशों से संबंध बनाने की तरफ मुड़ गया है। ■

भारत–यूके के द्विपक्षीय संबंध : व्यापार और निवेश

वर्ष 2020 में 2.7 ट्रिलियन यूएस डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) और 67 मिलियन से ज्यादा की आबादी के साथ, नॉमिनल जीडीपी के मामले में यूके पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रहा। यूके की अर्थव्यवस्था में काफी विविधता है। यहां 2020 में सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का 80% योगदान रहा और इस क्षेत्र से लगभग 82% रोज़गार मिला। इसी साल सकल घरेलू उत्पाद में निर्माण क्षेत्र का योगदान 9.6% का रहा। साथ ही, नौकरियों में 7.3% योगदान रहा।

व्यापार और निवेश

द्विपक्षीय व्यापार और निवेश संबंधों को और बढ़ाने के लिए यूके और भारत के पास वर्तमान में अच्छा अवसर है। पिछले कुछ सालों में भारत-यूके का व्यापार लगातार बढ़ा है। वर्ष 2020 में यूके, भारत का 14वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार रहा। भारत और यूके के बीच 2020 में कुल 12.5 बिलियन यूएस डॉलर का व्यापार हुआ। यह 2010 में 11.6 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। इसके अलावा, यूके से आयात की तुलना में भारत की तरफ से निर्यात की जा रही वस्तुओं की संख्या काफी तेजी से बढ़ रही है। भारत ने 2004 से यूके के साथ वस्तुओं के व्यापार में लगातार बढ़त बना रखी है, जो 2020 में 3.1 बिलियन यूएस डॉलर का रहा।

निर्यात: कुल मिलाकर, भारत से यूके को निर्यात 2010 के 6.4 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2020 में 7.8 बिलियन यूएस डॉलर के हो गए। वर्ष 2020 में, भारत से यूके को निर्यात की गई प्रमुख वस्तुओं में मशीनरी और मशीनी उपकरण (भारत के निर्यातों में 8.4% हिस्सेदारी) रहे। इसके बाद परिधान और कपड़ों का बुना हुआ या क्रोशिया किया हुआ सामान (7.6%), फार्मासूटिकल उत्पाद (7.3%), परिधान और कपड़ों का बिना बुना हुआ या बिना क्रोशिया किया हुआ सामान (6.9%), मोती, कीमती रत्न और धातु (6.8%), विद्युत मशीनरी और उपकरण (5.8%) तथा खनिज ईंधन और तेल (3.4%) के उत्पाद शामिल रहे।

आयात: वहीं दूसरी ओर, यूके से भारत द्वारा आयात 2010 के लगभग 5.2 बिलियन यूएस डॉलर से घटकर 2020 में 4.7 बिलियन यूएस डॉलर के रहे। उत्पाद के नज़रिए से देखा जाए, तो मोती, कीमती रत्न और धातु और मशीनरी और मशीनी उपकरण भारत में सबसे ज़्यादा आयात किए गए। यूके भारत द्वारा आयात की गई कुल वस्तुओं का 36% हिस्सा यूके से आता है। आयात किए गए अन्य प्रमुख उत्पादों में विद्युत मशीनरी और उपकरण (यूके से भारत में आयात की गई वस्तुओं का कुल 8.3%), ऑप्टिकल, फोटोग्राफिक, सिनेमैटोग्राफिक उपकरण (5.9%), लोहा और स्टील (4.8%), अकार्बनिक रसायन (4.7%), जहाज, नावें और फ्लोटिंग स्ट्रक्चर (4.5%), और एल्यूमीनियम तथा एल्यूमीनियम का सामान (4.5%) शामिल है।

भारत–यूके सेवा व्यापार संबंध

भारत का यूके के साथ सुदृढ़ सेवा-व्यापार संबंध है, जो वस्तु व्यापार के बराबर है। सेवा व्यापार में भारत, यूके का 10वां सबसे बड़ा भागीदार है। साल 2020 में यूके ने दुनिया भर में सेवाओं का जितना निर्यात किया उसमें भारत की 1.3% की हिस्सेदारी रही। इस वजह से यह यूके से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं वाला 20वां सबसे बड़ा देश रहा। वहीं, उसी साल यूके ने दुनिया भर से सेवाओं का जितना आयात किया, उसमें भारत की 3.5% की हिस्सेदारी रही। यूके को निर्यात करने वाला भारत 7वां सबसे बड़ा देश रहा। वर्ष 2010 में यूके का भारत के साथ कुल सेवा व्यापार 9.4 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। यह 2020 में बढ़कर 11.5 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया।

निर्यात: पिछले दशक में यूके से भारत को सेवाओं का निर्यात लगातार बढ़ा है, जो 2010 के 3.3 बिलियन यूएस डॉलर से 2020 में बढ़कर 4.3 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। साल 2020 में 59.1% की हिस्सेदारी के साथ, अन्य व्यावसायिक सेवाओं के लिए यूके से निर्यात की गई सेवाओं में भारत का सबसे बड़ा हिस्सा रहा। निर्यात की गई अन्य प्रमुख सेवाओं में यात्रा (11.2%), वित्तीय सेवाएं (6%), परिवहन (5.9%), दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं (5.3%), बीमा और पेंशन सेवाएं (3.6%) और बौद्धिक संपदा के उपयोग के लिए शुल्क (3.3%) के साथ ही कई अन्य सेवाएं शामिल रहीं।

आयात: भारत से यूके में 2010-2020 के दौरान कुल सेवाओं का आयात 6 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 7.3 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। यूके में आयात की गई अन्य व्यावसायिक सेवाओं में भारत का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा रहा। भारत से यूके में आयात की गई अन्य प्रमुख सेवाओं में दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं (12.8%), यात्रा (5.2%), परिवहन (4.1%) और वित्तीय सेवाएं (1.7%) शामिल रहीं।

यूके के साथ भारत का द्विपक्षीय निवेश

निवेश करने के लिए, यूके हमेशा भारतीय निवेशकों का पसंदीदा रहा है। ब्रेक्जिट के बावजूद यह रुझान बरकरार है। फायनैंशल टाइम्स के एफडीआई मार्केट्स के अनुसार, 2010-2020 के दौरान, यूके में भारत का पूंजी निवेश 12.3 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। इसमें 267 भारतीय कंपनियों ने 405 परियोजनाओं में निवेश किया। इसकी वजह से वहां 39,307 नौकरियों के अवसर पैदा हुए। पूंजी निवेश के मामले में, सबसे बड़ा हिस्सा ऑटोमोटिव ओईएम क्षेत्र (यूके में भारतीय निवेश का 37%), रियल एस्टेट (13.8%), ऑटोमोटिव उपकरणों (12.9%), सॉफ्टवेयर और आईटी सेवाओं (6.6%) कोयला, तेल और गैस (6.5%), धातु (4.8%), व्यापारिक सेवाओं (4.2%), और होटल और पर्यटन (3.1%) का रहा है।

दूसरी ओर, यूके वर्तमान में भारत में छठा सबसे बड़ा एफडीआई निवेशक है। फायनैंशियल टाइम्स के एफडीआई मार्केट्स के अनुसार, 2010-2020

के दौरान यूके से भारत में 37.7 बिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया गया। भारत में 468 ब्रिटिश कंपनियों ने 731 परियोजनाओं में निवेश किया। इससे यहां 1,74,247 नौकरियों के अवसर पैदा हुए। वहीं, निवेश के मामले में 2010-2020 के दौरान सबसे बड़ा हिस्सा धातुओं (14.1%), अक्षय ऊर्जा (11.4%), इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (10.9%), कोयला, तेल और गैस (9.2%), और संचार (8.1%) के क्षेत्रों में रहा।

यूके के साथ भारत के निर्यात को संरेखित करना

यूके और भारत के बीच एफटीए को लेकर चल रही बातचीत ने भविष्य की द्विपक्षीय साझेदारी को बढ़ाने के लिए मंच तैयार किया है। हालांकि, एफटीए सिर्फ तभी फायदेमंद होगा जब एक देश की निर्यात की मांग और दूसरे देश की आयात की मांग के बीच सामंजस्य होगा। वर्ष 2010-2020 के दौरान, यूके को आयात करने के लिए भारतीय निर्यात का संपूरकता सूचकांक (कॉम्प्लीमेंट्री इंडेक्स) 59.5 से 67.7 तक रहा है। जबकि भारत को आयात के लिए यूके के निर्यात का संपूरकता सूचकांक 53.4 से 60.6 तक रहा है। यह भारत के निर्यात और यूके के आयात में पर्याप्त संपूरकता की तरफ संकेत कर रहा है।

इसके अलावा, तुलनात्मक लाभ विश्लेषण का इस्तेमाल करते हुए, यूके में भारत के निर्यात को इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता के आधार पर 4 समूहों में बांटा गया है।

उत्पाद चैंपियन: एचएस 6-अंक स्तर पर, 732 वस्तुओं में से 362 वस्तुएं उत्पाद चैंपियन (पीसी) की श्रेणी में रहीं। भारत से 2019 में यूके को निर्यात की गई इन वस्तुओं की संयुक्त कीमत 4.04 बिलियन यूएस डॉलर रही। यह 2019 में भारत से यूके को निर्यात की गई वस्तुओं का लगभग 45.9% रहा। प्रमुख उत्पाद चैंपियन में टर्बोजेट, आभूषण का सामान, महिलाओं या लड़कियों के सिंथेटिक फाइबर के कपड़े, बलुआ पत्थर और मशीनरी के पुर्जो जैसी अन्य वस्तुएं शामिल रहे।

गिरावट वाले क्षेत्रों में विजेता उत्पाद: वर्ष 2019 में, गिरावट वाले क्षेत्रों की श्रेणी में कुल 224 उत्पाद रहे। इनमें भारत ने 3.1 यूएस डॉलर का निर्यात किया। यूके को भारत से निर्यात की गई वस्तुओं में इन उत्पादों की कुल 35.2% हिस्सेदारी रही। ये वे उत्पाद हैं, जिन्होंने भारत से यूके में निर्यात की जा रही वस्तुओं में महत्त्वपूर्ण जगह बनाई। लेकिन पिछले एक दशक से यूके में इन उत्पादों के आयात की मांग गिर रही है। सबसे ज़्यादा मांग की जा रही वस्तुओं में दवाएं, रबड़ के सोल वाले जूते, बच्चों के कपड़े और सूती कपड़ों का सामान, टी-शर्ट, बनियान और अन्य सूती बनियानें शामिल हैं।

गिरावट वाले क्षेत्रों में उम्मीद से कम प्रदर्शन करने वाले उत्पाद: इस श्रेणी में 106 आइटम मौजूद हैं। इसमें भारत ने यूके को 579.7 मिलियन यूएस डॉलर का निर्यात किया। यूके को भारत से निर्यात की गई वस्तुओं में इन उत्पादों की कुल 6.6% की हिस्सेदारी रही। ये ऐसे उत्पाद हैं, जिनकी यूके के बाज़ार में आयात की मांग बढ़ रही है। लेकिन भारत इन वस्तुओं के निर्यात की मांग पूरी नहीं कर पा रहा। इनमें मोटर कार, मीडियम ऑयल (तैलचित्रण में इस्तेमाल होने वाले तेल) और उन्हें बनाने में इस्तेमाल होने वाले तत्त्व, सेलुलर नेटवर्क के लिए टेलीफोन, ब्रेड, पेस्ट्री, केक, बिस्कुट और लोहे या स्टील की वस्तुएं और उन वस्तुओं के हिस्सों जैसे उत्पाद शामिल हैं।

गिरावट वाले क्षेत्रों में पीछे रहने वाले उत्पाद: गिरावट वाले क्षेत्रों में पीछे रहने वाले उत्पादों की श्रेणी में शामिल निर्यात किए जा रहे उत्पादों से यह पता चलता है कि इन उत्पादों के क्षेत्रों और उद्योगों में विविधता लाने की जरूरत है। ताकि भविष्य में निर्यात की संभावना बढ़ सके।

इसके अलावा, इस विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि भारत और यूके को उत्पाद चैंपियन की श्रेणी में आने वाले मौजूदा उत्पादों को और बेहतर करने की आवश्यकता है। ताकि इन उत्पादों की पूरी क्षमता का इस्तेमाल किया जा सके, जिनकी यूके के बाजार में पहले से ही मजबूत पकड़ है। अगर तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो इन उत्पादों को निर्यात करने पर भारत को भी लाभ है। मशीनरी और बिजली के उपकरण, परिधान और मोती और कीमती रत्नों जैसे क्षेत्र, भारत से यूके में निर्यात किए जा रहे उत्पाद चैंपियन क्षेत्रों में सबसे बड़ा हिस्सा रखने वाले क्षेत्र हैं। हालांकि, लंबे समय में, भारत को गिरावट वाले क्षेत्रों में उम्मीद से कम प्रदर्शन करने वाले उत्पादों की श्रेणी में वस्तुओं की निर्यात संख्या को बढ़ाने की जरूरत है। क्योंकि यूके के बाजार में इनकी आयात मांग बढ़ रही है, लेकिन भारत इन वस्तुओं के निर्यात की मांग पूरी नहीं कर पा रहा है।

भारत-यूके साझेदारी को बढ़ाने के लिए नीतिगत सुझाव

ब्रेक्जिट के बाद, भारत और यूके के द्विपक्षीय संबंधों में एक नई जान आई है। दोनों देशों ने फरवरी 2021 में एनहांस्ड ट्रेड पार्टनरशिप (ईटीपी) पर हस्ताक्षर किए हैं। ब्रेक्जिट के बाद हुए बदलाव के बाद, भारत और यूके को व्यापार और निवेश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए, अपने व्यापार और ऐतिहासिक संबंधों को और सुदृढ़ करने की जरूरत है। नीति बनाने के कुछ ऐसे मुख्य स्रोत जो द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं, उनमें यह चीज़ें शामिल हो सकती हैं: (i) भारत के लिए निर्यात क्षमता रखने वाली चिह्नित वस्तुओं के आधार पर व्यापार का विस्तार (ii) यूके ने अपने एफटीए के तहत, अपने बाज़ार में भारत के प्रतिस्पर्धियों के साथ जो रियायतें की हैं उनका भी ध्यान रखा जाए, (iii) गैर-टैरिफ बाधाओं को कम करने पर ध्यान केंद्रित करना, (iv) संवेदनशील वस्तुओं को छोड़कर, कच्चे माल पर कम शुल्क सुनिश्चित कर मूल्य श्रृंखला को आगे बढ़ाना, (v) सेवाओं की आपूर्ति के लिए लोगों को आवाजाही के लिए अस्थायी अनुमति देने में सहयोग बढ़ाना, (vi) डिजिटल प्रौद्योगिकी में सहयोग को बढ़ावा देना, (vii) उदार विदेशी निवेश नीति के माध्यम से यूके से निवेश को बढ़ावा देना। इसके जरिए विदेशी सेवा आपूर्तिकर्ता भारत में आसानी से काम कर सकते हैं और भारतीय कंपनियों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं, (viii) लॉजिस्टिक संबंधी बुनियादी ढांचे में सुधार करना, (ix) समान आदान-प्रदान को बढ़ावा देना, (x) निर्माण कार्य कर रही विकसित कंपनियों से निवेश प्रोत्साहित करना, जिससे निर्माण कार्य को स्थानीय बनाने के भारत के उद्देश्य को और मज़बूती मिलेगी और (xi) शिक्षा क्षेत्र, स्मार्ट सिटी, फिनटेक और अपशिष्ट प्रबंधन के साथ अलग-अलग क्षेत्रों में सहयोग करना। ■

कर्नाटक से निर्यातों को बढ़ाना

पिछले कुछ दशकों में, कर्नाटक राज्य भारत के आर्थिक विकास में सबसे आगे रहा है। यह मुख्य रूप से कृषि प्रधान राज्य से भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में उभरा है। वर्ष 2018-19 में 8% की हिस्सेदारी के साथ, कर्नाटक ने भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में ₹140.9 ट्रिलियन का योगदान किया। यह महाराष्ट्र (14.5%), तमिलनाडु (8.6%), उत्तर प्रदेश (8.4%) और गुजरात (8.1%) के बाद, सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करने वाला यह 5वां सबसे बड़ा राज्य रहा। कर्नाटक में प्रति व्यक्ति आय न केवल उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है, बल्कि 2011-12 से 2019-20 की अवधि के दौरान राष्ट्रीय तौर पर प्रति व्यक्ति की औसत आय से भी अधिक हो गई है।

कर्नाटक देश के ऐसे प्रौद्योगिकी, सेवा और ज्ञान केंद्र के रूप में उभरा है जो अपनी जगह बना रहा है। राज्य में बढ़ते हुए नौकरी के अवसरों की मदद से इस बात को बड़े पैमाने पर समझा जा सकता है। नई नौकरियों की वजह से देश भर के पेशेवर/कामगार कर्नाटक आते हैं।

कर्नाटक से होने वाला निर्यात

पिछले दो दशकों में, कर्नाटक कॉफी, रेशम, मसाले और हस्तशिल्प के अपने पारंपरिक निर्यात के अलावा इलेक्ट्रॉनिक और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, इंजीनियरिंग के सामान, रेडीमेड कपड़ों, पेट्रोकेमिकल, रत्न और आभूषण, कृषि और खाद्य प्रौद्योगिकी के उत्पादों और रसायनों के निर्यात में एक प्रमुख इकाई के रूप में उभरा है।

कर्नाटक से 2019-20 में मर्चेंडाइज वस्तुओं का निर्यात 16.6 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। कर्नाटक ने 2010-11 से 2019-20 के दौरान 4.8% की औसत वार्षिक वृद्धि दर (एएजीआर) दर्ज की। राष्ट्रीय निर्यात में कर्नाटक के व्यापारिक निर्यात की हिस्सेदारी 2019-20 के दौरान लगभग 5.3% की रही। सॉफ्टवेयर और सेवाओं से 39% का निर्यात दर्ज किया गया।

कर्नाटक से होने वाला वस्तु निर्यात

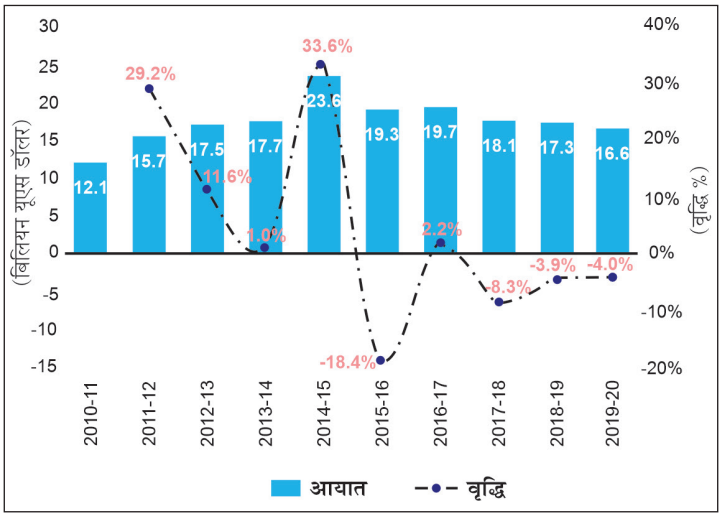

स्रोत : डीजीसीआईएस ; इंडिया एक्ज़िम बैंक रिसर्च

इसके अलावा, 2019-20 में कर्नाटक के कुल निर्यात में यहां से निर्यात होने वाली प्रमुख 10 वस्तुओं का लगभग 56% का योगदान रहा। यह 2014-15 में 71% रहा। वर्ष 2019-20 के दौरान, कुल निर्यात में 15% के योगदान के साथ प्रमुख निर्यात वस्तु `पेट्रोलियम उत्पाद' रहे। इसके बाद `आरएमजी कॉटन' (8%), `लोहा और स्टील' (7%), `इलेक्ट्रॉनिक उपकरण' (6%), और `इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं' (4%) का योगदान रहा।

कर्नाटक से 2019-20 में जितना कुल वस्तु निर्यात किया गया, उसमें 5 देशों का लगभग 40% हिस्सा रहा। ये पांच देश- अमेरिका (20.6%), संयुक्त अरब अमीरात (5.9%), चीन (4.7%), जर्मनी (4.1%), और नीदरलैंड (4.0%) हैं। ध्यान देने वाली बात है कि जिन देशों में कर्नाटक ने निर्यात किया, उनमें 2014-15 से 2019-20 के बीच काफी विविधता आई है। वर्ष 2014-15 में शीर्ष 5 देशों के पास कुल वस्तु निर्यात का 50% हिस्सा रहा। जबकि 2019-20 में यह आंकड़ा 40% रहा।

इंडिया एक्ज़िम बैंक के विश्लेषण के अनुसार, 2019 के दौरान कर्नाटक के निर्यात उत्पाद संकेंद्रण सूचकांक (ईपीसीआई) का मूल्य राज्य से किए गए वस्तु निर्यात के लिए 0.03 रहा। इसके अलावा, महाराष्ट्र, गुजरात और तमिलनाडु के लिए 0.08, 0.01 और 0.05 ईपीसीआई दर्ज किया गया। इससे पता चलता है कि तीन प्रतिस्पर्धी राज्यों में से कर्नाटक की निर्यात उत्पाद संघनता सिर्फ गुजरात से अधिक रही।

कर्नाटक के लिए निर्यात लक्ष्य

आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 और केंद्रीय बजट 2019-20 के मुताबिक सरकार का लक्ष्य, 2024-25 तक भारत को 5 ट्रिलियन यूएस डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए देश के निर्यात क्षेत्र का प्रमुख योगदान होगा। इसमें सरकार ने लक्ष्य रखा है कि 2024-25 तक, वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात का सकल घरेलू उत्पाद में कम से कम 20% यानी 1 ट्रिलियन यूएस डॉलर का योगदान हो।

एक आशावादी परिदृश्य के तहत, इसको ध्यान में रखकर यदि यह माना जाए कि भारत के कुल वस्तु निर्यातों में कर्नाटक की हिस्सेदारी 5.2% पर बनी हुई है तो वर्ष 2024-25 में भारत द्वारा 666.6 बिलियन यूएस डॉलर का आंकड़ा पार किया जा सकता है। इसके लिए, राज्य से होने वाले कुल वस्तु निर्यातों को समान सीएजीआर से बढ़ाना होगा, ताकि 2024-25 में कर्नाटक से निर्यात 35.32 बिलियन यूएस डॉलर का हो सके। इसके अलावा, अगर कम से कम निर्यात का भी अनुमान लगाया जाए, तो हो सकता है कि 2024-25 तक कर्नाटक लगभग 21.04 बिलियन यूएस डॉलर का वस्तु निर्यात कर ले। कुल मिलाकर, अगले 5 साल में अलग-अलग परिस्थितियों के अनुसार, कर्नाटक का निर्यात लक्ष्य 21.04 यूएस डॉलर से लेकर 35.32 बिलियन यूएस डॉलर तक हो सकता है।

उल्लेखनीय है कि वस्तु निर्यात चुनिंदा उद्योगों के आस-पास केंद्रित नहीं रहा है। हाल के वर्षों में कर्नाटक का प्रदर्शन उम्मीद से काफी कम रहा है। यहां बताए गए लक्ष्यों को कम और लंबे समय, दोनों परिस्थितियों में पूरा करने के लिए जरूरी है कि राज्य की मुख्य दक्षताओं पर केंद्रित अच्छी रणनीति बनाई जाए।

आगे क्या

वस्तु निर्यात क्षमता को पूरी तरह भुनाने के लिए कर्नाटक ने जो लक्ष्य तय किए हैं, उनमें निर्यातों के लिए बुनियादी ढांचे संरचना की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। क्षेत्रीय आवाजाही में सुधार कर राज्य में अच्छी तरह विकसित और सुदृढ़ निर्यात ढांचा बनाना होगा। लॉजिस्टिक की लागत में उल्लेखनीय कमी आएगी। साथ ही, आसपास के केंद्रों के बारे में जानने और उन्हें विकसित करने से कर्नाटक को अपनी वास्तविक क्षमता के बारे में पता लग सकता है।

इसके अलावा, सेवा निर्यात कर्नाटक की अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। इंजीनियरिंग, अनुसंधान और विकास सेवाओं, पर्यटन के बुनियादी ढांचे और चिकित्सा पर्यटन के निर्यात को लक्षित करना तथा क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा में सुधार करना, कुछ ऐसे क्षेत्र हो सकते हैं, जिन पर कर्नाटक ध्यान केंद्रित कर सकता है। ■

इंडिया एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं

इंडिया एक्ज़िम बैंक विदेशी वित्तीय संस्थाओं, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और अन्य विदेशी संस्थाओं को ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है। ये ऋण-व्यवस्थाएं उन देशों के क्रेताओं को भारत से विकासपरक तथा बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं, उपकरण, माल एवं सेवाओं का आयात करने में समर्थ बनाती हैं। इंडिया एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के आदेश पर भी ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इनके अंतर्गत इंडिया एक्ज़िम बैंक माल के शिपमेंट पर भारतीय निर्यातकों को कॉन्ट्रैक्ट मूल्य के 100% की प्रतिपूर्ति करता है, बशर्ते कि कुल कॉन्ट्रैक्ट मूल्य के कम से कम 75% के माल एवं सेवाओं का आयात भारत से किया गया हो। ऋण-व्यवस्थाओं के जरिए उभरते बाजारों में भारत की परियोजना निष्पादन क्षमता के प्रदर्शन में भी मदद मिली है। हाल के वर्षों में ऋण-व्यवस्थाओं ने गति पकड़ी है। विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशिआनिया और सीआईएस क्षेत्रों में सबसे ज्यादा ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की गई हैं। ऋण-व्यवस्थाओं ने भारत के राजनीतिक, रणनीतिक और वाणिज्यिक हितों को बढ़ावा देने के साथ-साथ लाभार्थी देशों में भारत की राजनीतिक ख्याति को बढ़ाने का काम भी किया है। ऋण-व्यवस्थाएं भारत की बढ़ी आर्थिक मजबूती के साथ-साथ इन ऋण-व्यवस्थाओं के प्राप्तकर्ता देशों में बुनियादी ढांचागत विकास और क्षमता निर्माण में योगदान देने की प्रतिबद्धता को वैश्विक पटल पर लाने में भी मदद करती हैं। ऋण-व्यवस्थाएं प्राप्तकर्ता देशों के ऐसे बाजारों में जरूरी माल और सेवाओं के निर्यात में भी मददगार हैं, जहां भारत की मौजूदगी न के बराबर है। भारतीय निर्यातक इंडिया एक्ज़िम बैंक से अपने माल के लिए पात्र मूल्य हासिल कर सकते हैं और इसके लिए उन पर किसी तरह का रिकोर्स नहीं रहता। बैंक द्वारा शिपिंग दस्तावेजों के निगोशिएशन/ सेवाओं के प्रावधान के एवज में किया जाता है। भारतीय निर्यातक माल के शिपमेंट पर इंडिया एक्ज़िम बैंक के जरिए पूरा भुगतान ले सकते हैं और इसमें उन्हें क्रेता या क्रेता देश से जुड़े किसी तरह के जोखिम का सामना नहीं करना पड़ता।

ऋण-व्यवस्थाएं संप्रभु सरकारों को या उनकी नामित एजेंसियों को प्रदान की जाती हैं, ताकि उन देशों में क्रेता भारत से माल और सेवाओं का आस्थगित भुगतान शर्तों पर आयात कर सकें। बैंक द्वारा यथा 20 दिसंबर, 2021 को अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशिआनिया और सीआईएस क्षेत्रों के 62 देशों को 27.35 बिलियन यूएस डॉलर की ऋण प्रतिबद्धता के साथ 276 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण-व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने जनवरी-मार्च 2022 की अवधि के दौरान भारत सरकार के सहयोग से निम्नलिखित एक ऋण-व्यवस्था करार पर हस्ताक्षर किए :

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने भारत सरकार की ओर से श्रीलंका सरकार को 500 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की है। यह ऋण-व्यवस्था पेट्रोलियम उत्पादों की खरीद के लिए प्रदान की गई है।

इस ऋण-व्यवस्था करार पर 02 फरवरी, 2022 को कोलंबो में हस्ताक्षर किए गए। इस पर श्री एस. आर. एट्टीगेल माननीय सचिव, वित्त मंत्रालय, श्रीलंका सरकार और श्री गौरव भंडारी, मुख्य महाप्रबंधक, एक्ज़िम बैंक ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर श्रीलंका के माननीय वित्त मंत्री श्री बसिल राजपक्षे और श्रीलंका में भारत के माननीय उच्चायुक्त श्री गोपाल बागले उपस्थित रहे। 500 मिलियन यूएस डॉलर के इस ऋण-व्यवस्था करार पर हस्ताक्षर के साथ ही एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से श्रीलंका सरकार को अब तक 2.18 बिलियन यूएस डॉलर की कुल 10 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। श्रीलंका सरकार को प्रदत्त ये ऋण-व्यवस्थाएं पेट्रोलियम उत्पादों, रेलवे परियोजनाओं, रक्षा और इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की आपूर्ति के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई हैं।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:
श्री गौरव भंडारी, मुख्य महाप्रबंधक
भारतीय निर्यात-आयात बैंक,
ऑफिस ब्लॉक, टावर-1, 7वीं मंज़िल, एड्जेसेंट रिंग रोड,
किदवई नगर (पूर्व), नई दिल्ली 110023,
फोन : +91-11-24607700
ई-मेलः eximloc@eximbankindia.in

दास्तान-ए-कामयाबी

इकोवास बैंक फॉर इन्वेस्टमेंट एंड डेवलपमेंट (ईबीआईडी) को इंडिया एक्ज़िम बैंक की भारत सरकार समर्थित 100 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने इकोवास बैंक फॉर इन्वेस्टमेंट एंड डेवलपमेंट को भारत सरकार के सहयोग से 100 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की है। यह ऋण-व्यवस्था ईबीआईडी के 15 सदस्य देशों में विभिन्न विकास परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई है। इस संबंध में ऋण करार पर 09 नवंबर, 2010 को हस्ताक्षर किए गए थे।

परियोजना का विवरण:

इस ऋण-व्यवस्था के अंतर्गत कॉन्ट्रैक्ट अशोक लेलैंड लिमिटेड और बुर्किना फासो के उच्च शिक्षा वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवोन्मेष मंत्रालय के बीच 30 जनवरी, 2017 को हस्ताक्षर किए गए थे और इस कॉन्ट्रैक्ट को ऋण-व्यवस्था में शामिल किया गया था।

परियोजना के कार्यक्षेत्र में बुर्किना फासो में विश्वविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए 135 बसों का अधिग्रहण, दो वर्कशॉप का निर्माण, कवर्ड पार्किंग क्षेत्र का निर्माण, कलपुर्जों की खरीद आदि शामिल है।

परियोजना की कुल लागत 20,000,000 यूएस डॉलर थी।

परियोजना 29 नवंबर, 2021 को सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है। ■

तिमाही गतिविधियां

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने वित्तीय वर्ष 2022 की चौथी तिमाही के लिए जारी किए पूर्वानुमान

एक्ज़िम बैंक द्वारा अपने निरंतर शोध प्रयासों की कड़ी में भारत के निर्यातों का तिमाही आधार पर ट्रैक रखने तथा वृद्धि में पूर्वानुमान के लिए एक्सपोर्ट लीडिंग इंडेक्स (ईएलआई) तैयार करने हेतु इन-हाउस मॉडल विकसित किया गया है।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने वित्तीय वर्ष 2021-22 की चौथी तिमाही के लिए निर्यातों के पूर्वानुमान जारी कर दिए हैं। इसके अनुसार,भारत के कुल वस्तु निर्यात लगातार तीसरी तिमाही में 100 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक के रहेंगे। इन पूर्वानुमानों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2021-22 की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च) के लिए भारत के कुल वस्तु निर्यात 23% की वृद्धि दर्ज करते हुए 111.3 बिलियन यूएस डॉलर और गैर-तेल निर्यात 15.8% की वृद्धि दर्ज करते हुए 95.2 बिलियन यूएस डॉलर के रहेंगे। जबकि पिछले वित्तीय वर्ष की इसी तिमाही के दौरान ये निर्यात क्रमशः 90.4 बिलियन यूएस डॉलर और 82.2 बिलियन यूएस डॉलर के रहे थे।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने की (ईरा) पुरस्कार 2020 के विजेता की घोषणा

डॉ.संजना गोस्वामी को भारतीय निर्यात-आयात बैंक (इंडिया एक्ज़िम बैंक) के अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शोध वार्षिक (ईरा) पुरस्कार 2020 के लिए विजेता घोषित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार उनके शोध प्रबंध "इंपैरिकल स्टडीज़ इन इंटरनैशनल ट्रेड" के लिए दिया गया। इस पुरस्कार की घोषणा 21 मार्च, 2022 को आयोजित वेबिनार में इंडिया एक्ज़िम बैंक की प्रबंध निदेशक सुश्री हर्षा बंगारी ने की। पुरस्कार के रूप में 3.50 लाख रुपये की राशि तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है। डॉ. डी. एम. नाचणे, पूर्वकुलाधिपति, यूनिवर्सिटी ऑफ मणिपुर, प्रफेसर एमेरिटस एवं पूर्व निदेशक, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च, मुंबई, इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान, डॉ. संजना गोस्वामी के पुरस्कृत शोध प्रबंध पर आधारित एक्ज़िम बैंक के प्रासंगिक आलेख का भी विमोचन किया गया।

एक्ज़िम बैंक ईरा पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, व्यापार तथा विकास व संबंधित वित्तपोषण के क्षेत्र में शोध एवं विश्लेषण को बढ़ावा देने का बैंक का एक प्रयास है। ईरा पुरस्कार के बारे में जानकारी देते हुए सुश्री हर्षा बंगारी ने बताया कि इस पुरस्कार की स्थापना 1989 में की गई थी। यह पुरस्कार 32 वर्षों से अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, व्यापार, विकास तथा संबद्ध वित्तपोषण के क्षेत्र में भारतीय नागरिकों द्वारा भारतीय अथवा विदेशी विश्वविद्यालयों में किए गए उत्कृष्ट शोध प्रबंधों के लिए प्रदान किया जाता है।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने बनाया अपना ईएसजी फ्रेमवर्क

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने संपोषी वित्तपोषण के प्रति अपनी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के साथ अपने पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) फ्रेमवर्क की घोषणा की।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने वैश्विक ईएसजी पद्धतियों के अनुरूप हरित,सामाजिक या संपोषी बॉन्ड और ऋण जारी करने के लिए अपना ईएसजी फ्रेमवर्क बनाया है। इसका उद्देश्य अपने स्टेकहोल्डरों के साथ पारदर्शिता और संपर्क बढ़ाना है। यह फ्रेमवर्क बैंक की व्यवसाय रणनीति में सहयोग देते हुए ऐसी परियोजनाओं के लिए वित्त प्रदान करने की बैंक की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, जिनका पर्यावरण पर और या / समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। यह फ्रेमवर्क 6 हरित और 4 सामाजिक क्षेत्रों में पात्रता मानदंडों को परिभाषित करता है। इनमें अक्षय ऊर्जा, सतत जल और अपशिष्ट जल प्रबंधन, प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण, स्वच्छ परिवहन, हरित भवन, बिजली की न्यूनतम खपत, आवश्यक सेवाओं और बुनियादी ढांचे तक पहुंच बढ़ाना, खाद्य सुरक्षा और संपोषी खाद्य प्रणाली, एमएसएमई वित्तपोषण और किफायती आवास जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

इस फ्रेमवर्क के अनुसार, प्रत्येक संपोषी वित्तपोषण ट्रांजैक्शन में आय के उपयोग प्रबंधन, परियोजना मूल्यांकन एवं चयन, आय के प्रबंधन और रिपोर्टिंग संबंधी प्रक्रियाओं को अपनाया जाएगा। इस तरह के बॉन्ड की आय का उपयोग खास तौर पर आईसीएमए सिद्धांतों के अनुरूप नई या मौजूदा पात्र हरित और/या सामाजिक परियोजनाओं के पूर्ण या आंशिक वित्तपोषण या पुनर्वित्तपोषण के लिए किया जाना ज़रूरी है। बैंक ने एक संपोषी वित्तपोषण समिति (एसएफसी) भी गठित की है, जिसमें बैंक के परिचालन, अनुपालन और विधिक समूहों के प्रतिनिधि शामिल हैं। यह समिति ऐसी परियोजनाओं का मूल्यांकन करेगी, जो इस फ्रेमवर्क के तहत पात्र हो सकती हैं।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने भारतीय सौर क्षेत्र पर आयोजित किया सम्मेलन

"इंडियन सोलर सेक्टरः फॉस्टरिंग ग्रोथ एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट" शीर्षक वाले शोध अध्ययन का विमोचन, 19 जनवरी, 2021 को बैंक द्वारा आयोजित एक वेबिनार के दौरान किया गया। अंतरराष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी की उप महानिदेशक सुश्री गौरी सिंह ने भारतीय परिदृश्य में सौर ऊर्जा के महत्त्व को रेखांकित किया। साथ ही उन्होंने बताया कि यह क्षेत्र किस तरह भारत के सीओपी26 अक्षय ऊर्जा लक्ष्यों को हासिल करने में अहम भूमिका निभा सकता है। इस परिचर्चा में अन्य के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी, एशियाई विकास बैंक, न्यू डेवलपमेंट बैंक जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं के विशेषज्ञ शामिल हुए।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने अपनाई वैकल्पिक संदर्भ दरें

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (इंडिया एक्ज़िम बैंक) ने नववर्ष से वैकल्पिक संदर्भ दरों (एआरआर) में ट्रांजैक्शन शुरू कर दिया है। लाइबोर के समाप्त होने के साथ, बैंक अपने दैनिक परिचालन एआरआर में करने के लिए तैयार है। प्रारंभिक कदम के रूप में, इंडिया एक्ज़िम बैंक लाइबोर से लिंक्ड अपने एक्सपोज़र की निरंतर निगरानी करता रहा है। बैंक ने लाइबोर ट्रांज़िशन के लिए एक बहु-आयामी आंतरिक संचालन समिति भी गठित की है, ताकि यह परिवर्तन सहजता से हो सके और बैंक के व्यवसाय में वैकल्पिक संदर्भ दरों को सुव्यवस्थित रूप से लागू किया जा सके। तदनंतर, लाइबोर ट्रांज़िशन से उत्पन्न होने वाले जोखिमों से निपटने के लिए बैंक के बोर्ड ने एक नीतिगत फ्रेमवर्क को भी मंजूरी दी। वर्तमान में, बैंक अपने मौजूदा वित्तीय कॉन्ट्रैक्ट, रीनिगोशिएट करने और अपडेट करने तथा वर्तमान कॉन्ट्रैक्टों और ट्रांजैक्शनों को जारी रखने के लिए एआरआर निर्धारित करने की एडवांस स्टेज में है। इस परिवर्तन को सुगम बनाने के लिए इंडिया एक्ज़िम बैंक ने आईएसडीए 2020 आईबोर फालबैक प्रोटोकॉल का भी पालन किया है। इससे डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्टों के लिए वैकल्पिक बेंचमार्क ट्रांज़िशन से जुड़े जोखिम उत्पन्न होने की आशंका अत्यल्प रह गई है। ■

विभिन्न देशों की आर्थिक स्थिति

यूएई

यूएई की अर्थव्यवस्था के 2021 की 3.3% से 2022 में 4.5% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। यूएई की अर्थव्यवस्था को सबसे ज्यादा मदद विश्व स्तर पर तेल की बढ़ती कीमतों से मिल रही है। अन्य तमाम देशों की तरह उसकी अर्थव्यवस्था में भी सुधार हो रहा है। घरेलू स्तर पर टीकाकरण की दर अच्छी है, इससे निजी उपभोग में मजबूती आने की संभावना है। यूएई ने अंदरूनी इलाकों में आवाजाही पर लगे प्रतिबंधों को कम किया है। साथ ही, वहां काम करने वाले विदेशी कामगार भी धीरे-धीरे लौटने शुरू हो गए हैं। वर्ष 2022-23 में अधिक संख्या में उनके लौटने की उम्मीद है। इससे भी निजी उपभोग बढ़ने की उम्मीद है। महामारी का असर हालांकि कमजोर हो रहा है और अर्थव्यवस्था भी मजबूत हो रही है, इसके बावजूद वैश्विक स्तर पर खाद्य पदार्थों और ऊर्जा की कीमतें बढ़ी हुई हैं। घरेलू स्तर पर मांग बढ़ी है और संपत्ति का मूल्य भी बढ़ा है। इससे सख्त मौद्रिक नीति के बाद भी महंगाई बढ़ने की आशंका है। यह 2022 में 3.5% तक पहुंच सकती है। जबकि 2021 में यह 0.2% थी। वस्तुओं के निर्यात से मिलने वाला राजस्व काफी कुछ तेल की वैश्विक कीमतों के मुताबिक ही हासिल होगा। यह इस बात पर भी निर्भर रहेगा कि अमीराती तेल-निर्यात कितना होता है। दुबई से पुनर्निर्यात की क्या स्थिति रहती है। सेवा-निर्यात की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार होने की उम्मीद है क्योंकि 2022 में महामारी की चिंताएं फीकी पड़ते जाने से अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की आमद बढ़ रही है। जहां तक चालू खाते की बात है तो इसका घाटा 2022 में जीडीपी का 14.6% तक रह सकता है। यह इसकी चरम स्थिति है। वर्ष 2021 में यह घाटा 12% रहा था।

कंबोडिया

कंबोडिया की अर्थव्यवस्था ने 2021 में 1.6% की दर से वृद्धि की थी। जबकि 2022 में यह वृद्धि 6.6% रहने की उम्मीद है। वर्ष 2022 में यहां की अर्थव्यवस्था की इस वृद्धि में सबसे अधिक योगदान महंगाई पर नियंत्रण (लो-बेस इफेक्ट) की स्थिति दे रही है। वास्तविक जीडीपी के 2023 से 2026 के बीच 6.8% के औसत से बढ़ने की संभावना है। हालांकि यह दर महामारी से पहले से पांच वर्षों (2015-19) की तुलना में कम है। उन वर्षों में जीडीपी 7.1% की दर से बढ़ी थी। उपभोक्ता मूल्य मुद्रा स्फीति की स्थिति 2022 में अच्छी रह सकती है क्योंकि अर्थव्यवस्था में सुधार हो रहा है और घरेलू मांग भी बढ़ रही है। कीमतें 2022 में 3.8% के औसत से बढ़ सकती हैं। हालांकि 2023 में ये 1.5% की दर तक नीचे आ सकती हैं। इससे 2024 से 2026 के बीच मुद्रास्फीति 2-3% के आसपास बनी रह सकती है। कंबोडिया यूएस डॉलर के मुकाबले अपनी मुद्रा रियाल (सीआर) के विनिमय के लिए क्रॉल-रिजीम प्रणाली का उपयोग करता है। इसमें मुद्रा की विनिमय दर निश्चित कर दी जाती है और मुद्रा के एक निश्चित दायरे में उतार-चढ़ाव अनुमत रहता है। स्थानीय मुद्रा को 2022 और 2023 में मूल्य-ह्रास की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि अमेरिका में ब्याज दरें बढ़ सकती हैं। वर्ष 2022 में 1 यूएस डॉलर की तुलना में सीआर 4,108 और 2023 में 4,116 के बीच रह सकता है। चालू खाते का घाटा 2022 में जीडीपी के 7% के करीब सिमट सकता है। यह 2021 में जीडीपी 43.9% तक पहुंच गया था। अमेरिका और यूरोप में चूंकि मांग बढ़ रही है, इससे यहां के वस्त्र और जूते-चप्पलों के निर्यात में वृद्धि होने की संभावना है। सोने का आयात बंद कर दिया है। इससे कुल आयात में गिरावट आने की उम्मीद है। हालांकि सेवा-क्षेत्र में संतुलन की उम्मीद अभी कम है, क्योंकि 2024 तक पर्यटन-आवक सामान्य होने की संभावना है।

बोलीविया

बोलीविया की अर्थव्यवस्था 2022 में 5% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। यहां से प्राकृतिक गैस का निर्यात काफी होता है और चूंकि वैश्विक रूप से ऊर्जा की कीमतें चढ़ रही हैं, इसका बोलीविया को फायदा मिलने की पूरी संभावना है। मध्यम अवधि में 2023 से 2026 के बीच वार्षिक वास्तविक जीडीपी वृद्धि 2.2% के औसत पर बनी रह सकती है। हालांकि यह महामारी से पहले के वर्षों की तुलना में कम है। इस कमी की वजह यह है कि महामारी की अवधि में प्राकृतिक गैस और खनिजों का उत्पादन कम हुआ है। वित्तीय संसाधन भी सिकुड़े हैं। मांग का दबाव लगातार बने रहने के चलते उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 2022 की 2.9% की तुलना में 2023 में 3.7% रह सकती है। बोलीविया का केंद्रीय बैंक बीसीबी 2023 में अपनी मुद्रा बोलीवियानो को 1 यूएस डॉलर की तुलना में 6.91 बीएस के आसपास बनाकर रख सकता है। वैसे, बोलीविया में उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव की संभावनाएं काफी बनी हुई हैं, क्योंकि पड़ोस के बाजारों से बाहरी मांग लगातार कम-ज्यादा होने की आशंका है। इससे संतुलन बाहरी बाजार की तरफ झुकने का जोखिम है। हालांकि ऊर्जा की बढ़ी हुई वैश्विक कीमतों के कारण व्यापार संतुलन में नाटकीय रूप से सुधार देखने को मिल सकता है। वहीं, चालू खाते का अधिशेष 2023-24 में जीडीपी के 2.1% के करीब रह सकता है। जबकि 2025-26 तक चालू खाते में 0.3% के औसत से घाटे की स्थिति बन सकती है।

ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था 2022 में 3.3% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। यहां बोरोजगारी की दर काफी कम है। साथ ही वेतन, मेहनताने में भी अच्छी वृद्धि देखी जा रही है। इससे परिवारों के खर्च बढ़ने की पूरी संभावना है। रिहायशी निर्माण और अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में निजी निवेश की स्थिति भी ठीक रहने की उम्मीद है। इससे भी अर्थव्यवस्था को रफ्तार मिलने की संभावना है। हालांकि यूक्रेन के संकट की वजह से 2022 में मुद्रास्फीति पर दबाव नजर आ सकता है, क्योंकि प्राथमिक रूप से घरेलू स्तर पर ईंधन की कीमतें बढ़ी हुई रहने वाली हैं। मुद्रास्फीति 3.8% के औसत पर रह सकती है, जो 2022 की आखिरी तिमाही में कुछ नीचे आ सकती है। खास तौर पर जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में सुधार आने लगेगा, तब। इसके बाद आवासीय बाजार भी थोड़ा नरम होगा ओर मौद्रिक नीतियां भी थोड़ी सख्त की जा सकेंगी। अमेरिका में फेडरल रिज़र्व द्वारा मौद्रिक नीति के सख्त और आक्रामक बनने से ऑस्ट्रेलियाई डॉलर पर भी दबाव नजर आ सकता है। वैश्विक निवेशक जोखिम भी इस दबाव में अपनी भूमिका निभा सकता है। इस सबसे 2022 के दौरान 1 यूएस डॉलर 1.38 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर के बराबर रह सकता है। ऑस्ट्रेलिया के कुल निर्यात में तरल प्राकृतिक गैस, कोयला और कच्चे लोहे की हिस्सेदारी आधे से भी अधिक है। इससे ऑस्ट्रेलिया को उपभोक्ता वस्तुओं की उच्च कीमतों से भी लाभ मिल सकता है। ऑस्ट्रेलिया में कई दुर्लभ किस्म के खनिज भी पाए जाते हैं। उनकी उपस्थिति से ऑस्ट्रेलिया को अपना निर्यात विस्तार करने में मदद मिल सकती है। हालांकि कच्चे तेल की बढ़ी हुई वैश्विक कीमतों से आयात बिल भी बढ़ने की संभावना है। इस सबसे चालू खाते में अधिशेष की स्थिति तो बनी रह सकती है, लेकिन इन अधिशेष 2021 के 3.5% की तुलना में 2022 में जीडीपी का 1.3% तक सिमट सकता है। ■

मुद्रा की प्रवृत्तियां

ग्रेट ब्रिटिश पाउंड

£ जब जून-2016 में ब्रिटेन ने यूरोपीय संघ से बाहर होने का फैसला किया था, तब से ग्रेट ब्रिटिश पाउंड (जीबीपी) डॉलर के मुकाबले नीचे जा रहा है। उस समय 1 यूएस डॉलर 1.50 जीबीपी के बराबर था। इसके बाद जीबीपी अपनी स्थिति से उबर नहीं पाया है। वैसे भी जब-जब विश्व बाजार में किसी किस्म का तनाव या दबाव बना है, जीबीपी परंपरागत रूप से खराब प्रदर्शन करता रहा है। यही कारण है कि 2016 का सिर्फ ब्रेक्जिट का जनमत संग्रह ही नहीं, 2008 की आर्थिक मंदी और अभी 2020 के कोरोना वायरस संकट के समय भी जीबीपी का प्रदर्शन खराब रहा। यूरो के मुकाबले उसकी विनिमय दर सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई।

नवंबर 2020 के बाद से अभी 14 मार्च, 2022 को यूएस डॉलर के मुकाबले जीबीपी की विनिमय दर सबसे कम 1.30 रही। मार्च के दूसरे हफ्ते में कई प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले इसकी कीमत गिरी। यूरो के मुकाबले इसमें जहां 1.60% की गिरावट आई, वहीं डॉलर की तुलना में यह 0.86% नीचे आया। अभी भी जीबीपी के लिए कोई बहुत अनुकूल वैश्विक परिवेश नहीं है, क्योंकि यूक्रेन में संघर्ष छिड़ा हुआ है। मुद्रास्फीति बढ़ रही है और वैश्विक आर्थिक वृद्धि में कमी आने की संभावनाएं हैं। रूस-यूक्रेन तनाव और आंतरिक मुद्रास्फीति के दबाव को देखते हुए कहा जा सकता है कि अभी जीबीपी में कमजोरी बनी रहने वाली है।

यथा 18 मार्च, 2022 को यूएस डॉलर के मुकाबले जीबीपी का मूल्य 1.3180 रहा।

थाईलैंड बात

฿ थाईलैंड की मुद्रा बात (टीएचबी) को म्यांमार ने मार्च 2022 से सीमा-व्यापार के लिए आधिकारिक मुद्रा के रूप में मान्यता दे दी है। चीन के बाद थाईलैंड दूसरा देश है, जिसने म्यांमार से सीमा-व्यापार के लिए वहां की मुद्रा क्यात के साथ अपनी राष्ट्रीय मुद्रा में विनिमय की मंजूरी दी है।

फरवरी में टीएचबी ने बीते सात महीने की तुलना में यूएस डॉलर के मुकाबले सर्वोच्च स्थिति दर्ज की। इसका कारण था, सोने की ऊंची कीमतें और विदेशी निवेश का लगातार आते रहना। इससे टीएचबी की स्थिति में सुधार आया। यह स्थिति भी तब बनी जब यूक्रेन संकट के कारण एशिया की अधिकांश मुद्राओं के इर्द-गिर्द चिंताएं व्याप्त रहीं।

हालांकि पर्यटन उद्योग, जो अभी कोरोना की मार के बाद उबरना शुरू ही हुआ था, एक बार फिर नई चुनौती का सामना कर रहा है। यह चुनौती रूस-यूक्रेन तनाव के कारण पैदा हुई है। थाईलैंड के लिए इस तनाव से जोखिम अधिक है, क्योंकि वहां आने वाले अधिकांश पर्यटक रूसी होते हैं। चालू खाते से जुड़ी चिंता भी है, जो तेल की ऊंची कीमतों और पर्यटन से मिलने वाले राजस्व के कमजोर होने की आशंकाओं के बीच घाटे में जा सकता है। इन चिंताओं के मद्देनजर टीएचबी में गिरावट का दौर जारी है।

मार्च 18, 2022 को यूएस डॉलर के मुकाबले टीएचबी का मूल्य 33.29 रहा।

रूसी रूबल

₽ वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से रूस की अर्थव्यवस्था सबसे गंभीर संकट का सामना कर रही है। यूक्रेन से तनाव के मद्देनजर पश्चिमी देशों ने रूस के लगभग पूरे वित्तीय और कॉर्पोरेट तंत्र पर प्रतिबंध लगा दिए हैं। तेल, गैस और धातुओं के सबसे बड़े निर्यातक रूस को दुनिया से अलग-थलग करने की पश्चिम की कोशिश ने पूरे विश्व के वस्तु-बाजार पर चोट की है। पूरी दुनिया में मुद्रास्फीति बढ़ाई है। पश्चिमी जगत के सख्त कदमों के तहत रूस के बैंकों को अंतरराष्ट्रीय भुगतान प्रणाली "स्विफ्ट" से प्रतिबंधित कर दिया गया है। रूस के केंद्रीय बैंक को पाबंद किया गया है कि वह अपने पास रखी विदेशी पूंजी का इस्तेमाल न कर सके। रूस के सरकारी मीडिया का प्रसारण प्रतिबंधित है। साथ ही रूस की उड़ानों के यूरोप के आकाशीय क्षेत्र से गुजरने पर पाबंदी है। जाहिर तौर पर रूस की मुद्रा रूबल (आरयूबी) पर भी इसका विपरीत असर पड़ा है। पिछले महीने से इसकी कीमत गिरने का सिलसिला जारी है और अब तक मॉस्को स्टॉक एक्सचेंज में इसका मूल्य यूएस डॉलर की तुलना में करीब एक तिहाई नीचे आ चुका है। रूस के यूक्रेन पर हमले के जवाब में हुई पश्चिम की कार्रवाई से रूसी अर्थव्यवस्था बुरी तरह हिल गई है। इसके नतीजे में आरयूबी इस साल दुनिया में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली मुद्रा हो चुकी है। इन परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में इस मुद्रा में अतरलता भी देखी गई है।

यथा 18 मार्च, 2022 को यूएस डॉलर के मुकाबले आरयूबी का मूल्य 99 रहा। इस बीच, 7 मार्च, 2022 को इसका मूल्य 150 की रिकॉर्ड गिरावट पर भी पहुंच चुका है।

सिंगापुर डॉलर

S$ यूक्रेन के तनाव की वजह से पूरी दुनिया में ऊर्जा और खाद्य वस्तुओं के दामों में जो वृद्धि हुई है, उसकी काली छाया सिंगापुर पर भी पड़ी है। उसकी अर्थव्यवस्था पर भी इसका विपरीत असर पड़ा है। संभवतः इसीलिए यूक्रेन से इतनी दूर स्थित होने के बावजूद सिंगापुर सरकार ने भी रूस के खिलाफ सख्त प्रतिबंध लगाए हैं। यह निर्णय सिंगापुर की इस भावना के अनुरूप है कि वह छोटे देशों का अगुआ बनना चाहता है। इससे पहले भी वह लगातार अपनी तरह के अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में छोटे देशों के अस्तित्व से जुड़ी चिंताओं को उठाता रहा है।

जहां तक सिंगापुर डॉलर का सवाल है, तो बीते तीन महीने से लगातार इसका अवमूल्यन हो रहा था। चिंता इस बात की थी कि चीन के खिलाफ अमेरिका आर्थिक प्रतिबंध लगा सकता है। इस कारण, 15 मार्च, 2022 को सिंगापुर डॉलर दिसंबर 2021 के बीच यूएस डॉलर के मुकाबले अपने सबसे निचले स्तर को छू गया। उस समय 1 यूएस डॉलर का मूल्य 1.3687 सिंगापुर डॉलर रहा।

जनवरी से मार्च के बीच यूएस डॉलर की तुलना में सिंगापुर डॉलर का मूल्य 1.3404 से 1.3687 के बीच झूलता रहा। वहीं 18 मार्च, 2022 को 1 यूएस डॉलर की कीमत 1.3547 सिंगापुर डॉलर रही। ■

एक्ज़िम मित्र

भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय को विस्तार देने और भारतीय उद्यमियों के बीच व्यापार वित्त, ऋण बीमा और व्यापार से जुड़ी अन्य सूचनाओं के प्रसार की विषमता दूर करने के लिए इंडिया एक्ज़िम बैंक ने एक पोर्टल शुरू किया है। इसके मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं। पहला- निर्यातों के लिए ऋण की उपलब्धता के संबंध में जानकारी मुहैया कराना। उसके लिए समग्र प्रयास करना। दूसरा- एक्ज़िम मित्र के जरिए इस तरह के प्रयास करना, जिनसे भारतीय उद्यमियों की अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जुड़ी जिज्ञासाओं का समाधान हो। इनमें से कुछ नीचे दी गई हैं:

नए निर्यात व्यापारियों के लिए पंजीयन-सह-सदस्यता प्रमाणपत्र (आरसीएमसी) के बारे में जानकारी

आरसीएमसी के लिए आवेदन करते वक्त निर्यातक को अपने आवेदन में अपने प्राथमिक व्यवसाय की जानकारी देना जरूरी है। फिर उस मुख्य उत्पाद से जुड़ी परिषद से आरसीएमसी लेना होता है। अगर वह उत्पाद किसी निर्यात प्रोत्साहन परिषद/कॉमोडिटी बोर्ड के दायरे में नहीं आता है तो ऐसे मामले में भारतीय निर्यात संगठन संघ (फिओ) से आरसीएमसी हासिल किया जा सकता है। ऐसे मामलों में भी फिओ से आरसीएमसी हासिल किया जा सकता है, जहां मुख्य उत्पाद/सेवा सुनिश्चित न हो या कई ऐसे उत्पादों का निर्यात करना हो, जो किसी परिषद या बोर्ड के दायरे में नहीं आते हों।

ऐसे बहु-उत्पाद निर्यातक, जिनके पंजीकृत कार्यालय या मुख्यालय पूर्वोत्तर राज्यों में हैं, शेल्लाक या वन उत्पाद निर्यात प्रोत्साहन परिषद से आरसीएमसी ले सकते हैं। हालांकि यह व्यवस्था सिर्फ उन्हीं उत्पादों के लिए है जो एपीडा, मसाला बोर्ड या चाय बोर्ड के दायरे में नहीं आते। इसी तरह, जम्मू-कश्मीर राज्य के हथकरघा उत्पादों के निर्यातक जम्मू-कश्मीर सरकार के हथकरघा एवं हस्तशिल्प निदेशक कार्यालय से आरसीएमसी ले सकते हैं।

एक्ज़िम बैंक के क्रेता ऋण से संबंधित जानकारी

क्रेता ऋण हमारा एक अनूठा ऋण सुविधा कार्यक्रम है। यह नए निर्यातकों को नई भौगोलिक सीमाओं में कदम रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस कार्यक्रम के जरिए विदेश में बैठा खरीदार किसी भारतीय निर्यातक के पक्ष में `लैटर ऑफ क्रेडिट" यानी साख-पत्र खोल सकता है। इसके आधार पर उस निर्यातक से उत्पाद का आयात कर सकता है। इसका भुगतान बाद में हो सकता है। इससे भारतीय निर्यातकों के लिए लेन-देन की लागत कम हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार ट्रांजैक्शन की जटिलताएं भी कम हो जाती हैं। अपनी कार्यशील पूंजी को व्यापार-विस्तार से जुड़े अन्य समुचित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लगा पाते हैं। एक्ज़िम बैंक जो क्रेता ऋण उपलब्ध कराता है, उसे सिर्फ भारतीय उत्पादों और सेवाओं के निर्यात के लिए ही इस्तेमाल किया जा सकता है।

बैंक राष्ट्रीय निर्यात बीमा खाते (एनईआईए) के तहत भी क्रेता ऋण उपलब्ध कराता है। इसका मकसद परंपरागत के साथ विकासशील देशों के नए बाजारों में भारत के निर्यात को बढ़ावा देना है। इस तरह के बाजारों में अक्सर मध्यम या लंबी अवधि में भुगतान किए जाने की आवश्यकता महसूस की जाती है। इस अनूठे वित्तपोषण कार्यक्रम के तहत विदेश की सरकारों या सरकारी स्वामित्व वाली इकाइयों के लिए भी भारतीय उत्पादों और सेवाओं के लिए ऋण प्रदान किया जाता है। इसके जरिए वे मध्यम या लंबी अवधि में बाद में भुगतान कर सकते हैं।

उपयोग की जा चुकी रेल, लोहा और इस्पात के आयात से जुड़ी जानकारी

विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) के मुताबिक उपयोग की जा चुकी रेलों के आयात का विषय आयात नीति-2017 के अनुच्छेद-1 के अध्याय 73 में आईटीसी (एचएस) के तहत आता है। आईटीसी एचएस कोड (7302) के तहत पूरी लंबाई वाली या टुकड़ों में कटी रेलों का आयात पूरी तरह `मुफ्त" है। हालांकि उसके लिए कुछ शर्तों, प्रमाणों की पूर्ति करनी होती है, जो इस तरह है...

1. प्री-शिपमेंट इंस्पेक्शन सर्टिफिकेट (पीएसआईसी) की जरूरत होती है। इसका फॉर्मेट एफटीपी (2015-20) के एएनएफ 2एल में दिया गया है। यह परीक्षण और प्रमाणीकरण परिशिष्ट 2जी में सूचीबद्ध किसी भी एजेंसी से कराया जा सकता है। इसमें यह बताना होता है कि आयात की जा रही रेलों में रेडिएशन का स्तर क्या है। साथ ही, यह भी उनमें गामा और न्यूट्रॉन का रेडिएशन प्राकृतिक पृष्ठभूमि से अधिक नहीं है। रेलों में अधिकतम रेडिएशन स्तर कितना है और बैकग्राउंड रेडिएशन का मूल्य क्या है, ये सभी चीजें प्रमाणपत्र पर दर्ज होनी जरूरी हैं।
2. आयातक और निर्यातक के बीच हुए कॉन्ट्रैक्ट की प्रति देना भी आवश्यक है। इसमें बताना होता है कि कंसाइनमेंट में किसी रूप में, किसी तरह का दूषित रेडियोएक्टिव पदार्थ नहीं है।

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर बोर्ड और सीमा शुल्क के मुताबिक, एचएसएन कोड 73021050 के तहत आयातित और पूर्व में उपयोग में आ चुकी रेलों के आयात पर सीमा शुल्क 15% है। जबकि आईटीसी (एचएस) कोड 7302 के तहत आयातित सभी तरह की रेलों, चाहे वह टुकड़ों में हों या पूरी लंबाई वाली, का आयात पूरी तरह मुफ्त है। बस, उसके लिए पीएसआईसी जमा कराना जरूरी है। इसमें बैकग्राउंड रेडिएशन के स्वीकृत स्तर की जानकारी दर्ज होनी जरूरी है। साथ में यह दर्ज होना भी जरूरी है कि किसी तरह का दूषित रेडियोएक्टिव पदार्थ (संदर्भ- आईटीसी एचएस कोड 1, अध्याय - 73) उनमें न हो।

यूएई को चक्की में पीसे उत्पादों/आटा आदि के निर्यात से संबंधित जानकारी

एपीडा नाम की संस्था सभी तरह के परिष्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यातों को बढ़ावा देने और उनके विकास के लिए है। इन उत्पादों में चक्की में पीसे गए उत्पाद भी शामिल हैं। विस्तृत जानकारी के लिए एपीडा की वेबसाइट देखी जा सकती है। पीसे हुए उत्पाद विस्तृत तौर पर चार अंकों वाली श्रेणी एचएस कोड 1101 के तहत आते हैं। लेकिन डीजीएफटी के डेटाबेस की मदद से संबंधित व्यक्ति को 6 या 8 अंकों वाले सही एचएस कोड की भी सावधानीपूर्वक पहचान करनी चाहिए। उत्पादों की निर्यात नीति के बारे में पूरी जानकारी के लिए इंडियन ट्रेड पोर्टल देखा जा सकता है। नीचे कुछ चरणों में इसका तरीका बताया जा रहा है:

1. एचएस कोड डालिए या उत्पाद (पिसा हुआ)। इसके बाद `फाइंड" बटन पर क्लिक कीजिए।
2. अपने विवरण के अनुसार जिस उत्पाद का निर्यात करना है, उसे चुनिए। इसके बाद `नेक्स्ट" बटन पर क्लिक कीजिए।
3. उस देश (यूएई) को चुनिए, जहां आपको उत्पाद निर्यात करना है।
4. अपने उत्पाद से जुड़ी निर्यात नीति का विवरण आपको मिल जाएगा। ■

आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

मर्चेंडाइज व्यापार

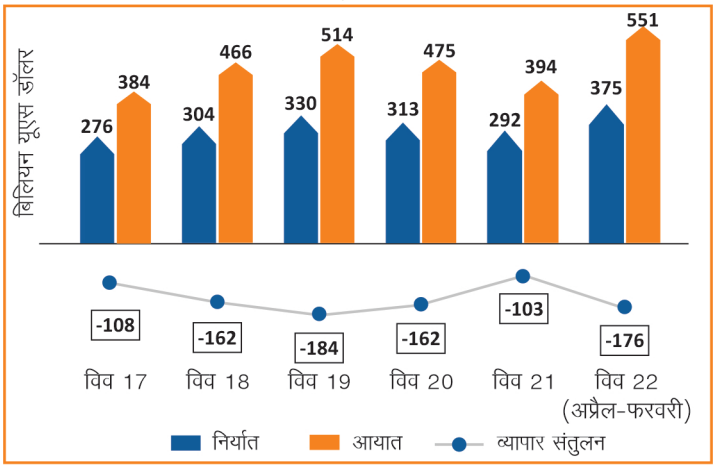

स्रोत: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

सेवा-क्षेत्र में व्यापार

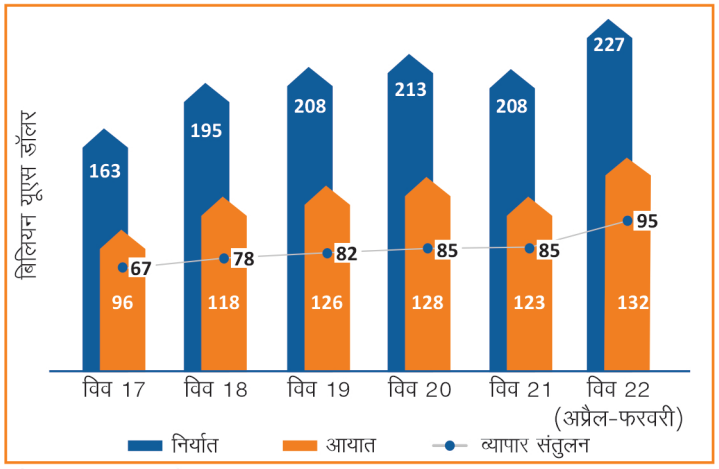

स्रोत: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह

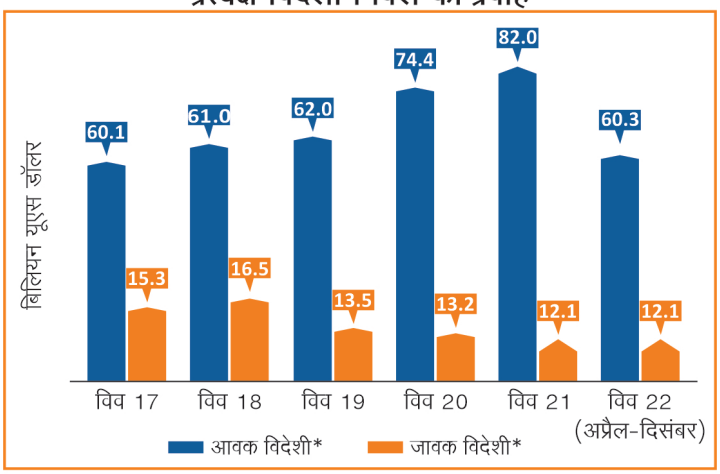

नोट: जावक विदेशी निवेश में इक्विटी, ऋण, गारंटी आदि शामिल हैं ।
स्रोत: आरबीआई, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति

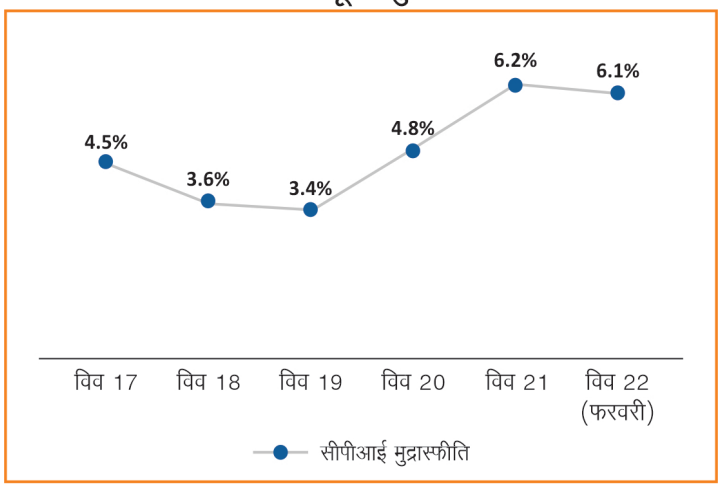

स्रोत: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार

चालू खाता घाटा

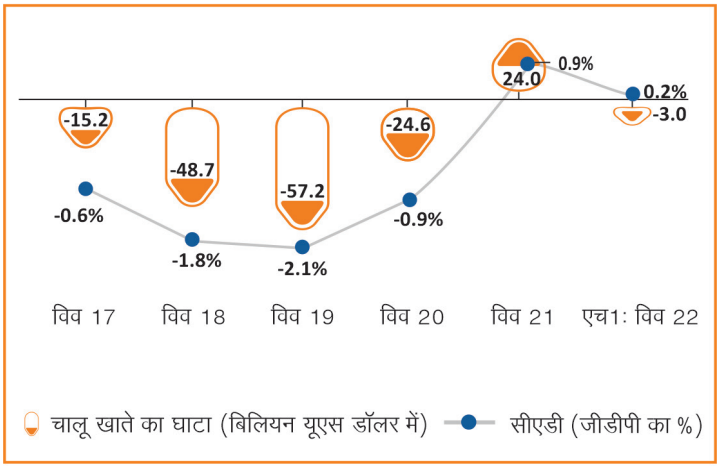

स्रोत: आरबीआई

क्षेत्रवार उत्पादन

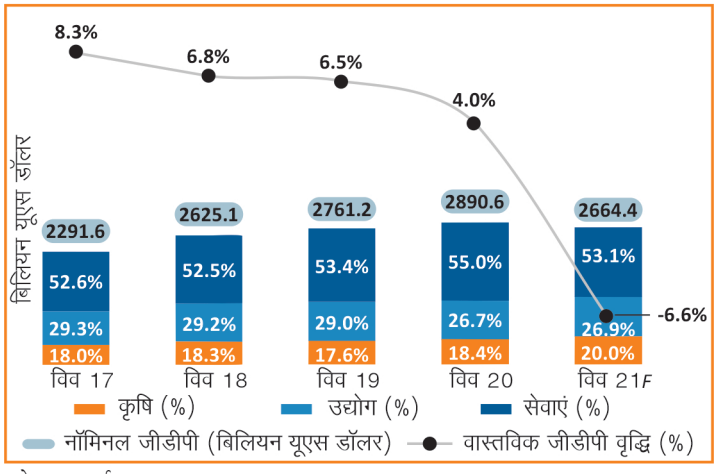

नोट: F पूर्वानुमान
स्रोत: अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार